विश्व के महा परिवर्तन के लिए
नया महामंत्र
“ बेहद की परमशान्ति
सोचो, बोलो,
परमशान्ति
मिल जाएगी ”
www.youtube.com/anant98251
www.bapujidashrathbhaipatel.org

बेहद की परमशांति

शिव , महाशिव और परम महाशिव कौन है और उनके रहस्य क्या है?

हम लोग हर साल महा शिव रात्री मनाते हैं तो उस रात्री को महाशिव की आराधना करते हैं। तो शिव और महा शिव मे अंतर क्या है। हम कुछ मंदिरों में शिव लिंग की पूजा करते हैं और कुछ मंदिर में शिव पार्वती के साथ गणेश और कार्तिकेय की पूजा करते हैं। और हमारे हिन्दू धर्म मे 12 ज्योतिर्लिंग का बिशेष महत्व है। इतने सारे रूप के क्या रहस्य है। इसके लिये हमे गहरे ज्ञान की खोज करनी चाहिये और उसके साथ आज की विज्ञान की खोज की भी जानकारी लेनी चाहिये। हमारे हिन्दू धर्म मे 18 पुराण है और ये पुराण मूल रूप से शिव या ब्रह्मा या बिष्णु या देवी के ऊपर आधारित है। हमारे जितने भी पुराण है इन सब मे सिर्फ इस सौर मण्डल के बारे में बताया गया है जिसमे ये धरती एक अंश है। इस सौर मण्डल को एक ब्रह्मांड के नाम से इन पुराणों मे बताया गया हैं। ये पुराण बहुत पहले लिखे गये है , हमारे ऋषि और मुनि लोग अपने आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा उस अन्तरिक्ष ज्ञान को किताब के आकार मे लिखा था जिसमे इस धरती के ऊपर सृष्टि कैसे आयी है ये सब बताया था। इन सब आध्यात्मिक बिज्ञान के रहस्य को कहानी के माध्यम से बताया था। समय के साथ ये आध्यात्मिक बिज्ञान लुप्त हो गयी और सिर्फ कहानी बच गयी। जैसे समय के साथ सच्चाई इतिहास मे बदल जाती है और इतिहास लेखक

के समझ के हिसाब से बताया जाता है। ऐसे ही इन पुराण के बहुत गूढ़ आध्यात्मिक बिज्ञान के रहस्य अब सिर्फ एक कहानी बनकर रह गये। क्यूँ की आज के समय मे ऐसा कोई दिव्य दृष्टि धारक ब्यक्ति नहीं जो ये सब रहस्य को समझा सके। जैसे समय के साथ भौतिक जगत मे परिबर्तन होता है ऐसे है आध्यात्मिक जगत मे भी परिबर्तन होता है। लेकिन ये सब को समझने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान के साथ दिव्य दृष्टि कि भी जरूरत है। तो हम यहाँ पर पहले ये समझे की ये सृष्टि कैसे आयी और इसको समझने के लिए हम श्रीमद भगवत गीता के सहारा लेते हैं। निम्न श्लोक को देखें

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥ ९-४॥

ये सब संसार मेरे निराकार स्वरूपसे ब्याप्त है। सम्पूर्ण प्राणी मुझमे स्थित हैं; परंतु में उनमे स्थित नहीं हूँ तथा वो प्राणी भी मुझमे स्थित नहीं हैं।

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥ ७-२४॥

बुद्धिहीन मनुष्य मेरे परम , अविनाशी और सर्वश्रेष्ट भावको न जानते हुए अव्यक्त मुझ सच्चिदानंद परमात्माको मनुष्यकी तरह शरीर धारण करनेवाला मानते हैं।

बेहद की परमशांति

तो पहले ये समझ लें की ये पूरी सृष्टि निराकार स्वरूप से ही आयी है और हम शिव पुराण को माने तो शिव निराकार ही है जिससे ये पूरी सृष्टि आयी है। मूल रूप मे शिव निराकार ज्योति स्वरूप हैं इसलिए 12 ज्योतिर्लिंग की मान्यता हिन्दू पुराण मेँ हैं। ज्योतिर्लिंग का अर्थ हे लिंग आकार की ज्योति,उस स्वरूप के ऊपर पहले ऋषि मुनि लोग ध्यान करते थे और उस ध्यान से वो ज्योति स्वरूप से दिव्य शक्ति पाते थे।एक ब्रह्मांड का मालिक शिव ही होता है जहांसे इस ब्रह्मांड की सारे सृष्टि निर्मित होती है। तो निराकार शिव ये सब साकार सृष्टि के कारण है। इसलिए निराकार शिव इस सृष्टि के बाप या मालिक है। समय के साथ मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति कम होती गयी और ये निराकार से साकार मूर्ति पूजा मे लग गया। इसलिए ये शिव पार्वती मूर्ति पूजा शुरू हुई।

आज की विज्ञान की खोज के हिसाब से अनंत कोटी ब्रम्हान्ड अंतरिक्ष मे आकाशगंगा मे परिक्रमा कर रहें हैं। तो एक ब्रह्मान्ड के मालिक एक शिव है तो ये बाकी सब ब्रह्मान्ड के मालिक भी एक एक शिव ही है तो अंतरीक्ष मे अनंत कोटी शिव आकाशगंगा के अंदर आकाशगंगा के केंद्र की चारों तरफ परिक्रमा कर रहें है। ये आकाशगंगा के मालिक कौन है जिसके चारों तरफ अनंत कोटी शिव परिक्रमा कर रहें हैं। तो ये आकाशगंगा के मालिक को महाशिव कहते हैं। ऐसे अनंत संख्या के आकाशगंगा एक यूनिवर्स(universe) के अंदर यूनिवर्स के केंद्र के चारों तरफ परिक्रमा कर रहें हैं। ये यूनिवर्स के मालिक को परम महाशिव कहते हैं। तो अनंत कोटी

बेहद की परमशांति

शिव महाशिव के चारों तरफ परिक्रमा कर रहें है , अनत कोटी महाशिव परम महाशिव के चारों तरफ परिक्रमा कर रहें हैं। ये तो आज की विज्ञान की खोज है की इतनी सृष्टि तो अंतरिक्ष में हैं। तो हमारा ये ब्रह्मान्ड बहुत छोटा हे जब हम ये पूरी सृष्टि को देखें तो। जैसे हम शिवजी की पूजा करके हमे शक्ति मिलती है ऐसे ही शिव महाशिव के चरो तरफ परिक्रमा करके महाशिव से शक्ति लेते हैं और ऐसे ही महाशिव परम महाशिव से शक्ति लेते हैं। ये सृष्टि बहुत विशाल है और हम तो कुछ भी नहीं हैं। इसलिए साल मे एक बार हम लोग महाशिव रात्री मनाते हैं जब की हर महिनेमे एक शिव रात्री आता है।

ये सृष्टि इतनी बड़ी है की इसकी कोई अंत या हद नहीं तो इसको हम अनंत या बेहद की सृष्टि कहेंगे। जैसे एक सृष्टि के मालिक या बाप एक शिव हैं ऐसेही बेहद के सृष्टि के मालिक को बेहद का बाप कहते हैं।

ये सब आध्यात्मिक ज्ञान के लिए www.youtube.com/anant98251को देखें

https://www.youtube.com/watch?v=Jk6DGPJ_7PE&list=PLhwIbX87USVEheegyG0Sf4QWL-_9OZRRg&index=49

www.youtube.com/anant98251

कर्म और भाग्य

सबके मन में ये सवाल बार बार आता है की कर्म और भाग्य से कौन ज्यादा ताकतवर है। इस सवाल के उत्तर मे पहले हमे कर्म और भाग्य कैसे हमारे जीवन मे आते हैं उसको समझने की आवश्कता है। जो इसको समझ गया वो कभी इस सांसरिक चक्कर मे नही पड़ेगा। ये श्रीमद भगवत गीता मे बहुत अच्छी तरह समझाया गया है।कर्म करने मे थोड़ी सी भी असवधानी, बड़े बड़े आध्यात्मिक गुरुओकों भी परेशानी मे डाल देती है और उससे बच नहीं पाते। कर्म की महात्म्य की बारे मे श्रीमद भगवत गीता मे बहुत विस्तार से समझाया गया है उसीमे से एक श्लोक नीचे दिया जा रहा है।

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ३-५॥

कोई भी मनुष्य किसी भी अवस्था में क्षण मात्र भी कर्म किए बिना नहीं रह सकता; क्यूँ की प्रकृतिके परबश हुए सब प्राणियोंसे प्रकृतिजन्य गुण कर्म करवा लेती है।

इसका मतलब ये हुआ की मनुष्य विवश हे कर्म करने के लिए और वो अपने आपको भी इस मामले मे रोक भी नहीं पाएगा क्यूँ की वो क्षण मात्र

भी कर्म किए बिना रह नहीं सकता।इसका ये मतलब हे की हर बक्त जैसे खाते, पीते, सोते, बैठते कर्म करे जा रहा है। वो कैसे ? इसका मतलब ये हुआ की केबल शारीरिक परिश्रम कर्म नहीं सोचना भी कर्म है। इसलिए हम अपने आपको रोक नहीं पा रहें हें। ये सोच बिना रुके अपने आप चलता रहता है। और मनुष्य इसमे बेबश महसूस करता है।श्रीमद भगवत गीता कहती है की सब प्राणियाँ जिसमे मनुष्य भी शामिल हे, प्रकृति के परबशमे हे और ये प्रकृति सब कुछ आपने आप कर्म करबा लेता है। इससे ये साबित होता है की मनुष्य पकृति के बस मे है जैसे के बाकी सभी पशुएँ प्रकृति की बस मे हैं।ये प्रकृति क्या हे और इससे कैसे मनुष्य बाहर आए। प्रकृति अनंत हे और ये ईश्वर की प्रथम कृति हे तो ये तो शक्तिशाली तो होगी ही। लेकिन प्रकृति को ताकत कौन देता हे वो हे हम और हमारे कर्म। हमारे कर्म कैसे बनते है? पहले हम को ये समझना पड़ेगा हम क्या है और हमने कैसे इस धरती पर जन्म लिया? ये सब गहरा आध्यात्मिक बिज्ञान हे। इसके लिए ये स्थान बहुत छोटा हे पूरी तरह समझने के लिए। हम मनुष्य मे सोच को लगाम देने की या परिबर्तन करने की शक्ति हे जो की बाकी पशुओं मे नहीं है। ये अंतर मनुष्य को बाकी पशुओंसे अलग करता है। तो मनुष्य का सोच मन से आता हे और मन कहाँ हे? ये मन मनुष्य मे कैसे आया? अब हमे ये कहना होगा की मनुष्य मे आत्मा हे जो की मनुष्य को धरती के ऊपर रहेने की शक्ति देती हे इसलिए जबतक आत्मा हे तबतक मनुष्य जिंदा हैं। आत्मा मनुष्य का मूल रूप हे और

बेहद की परमशांति

बाकी सब आत्मा के ऊपर आबरण है जो की प्रकृति द्वारा दी हुई हे। जो प्रकृति समय के साथ देती और समय के साथ ले लेती है। ये जो आबरण हे इसमे मन, बुद्धि, और संस्कार शामिल है। तो ये **तीन प्रकृति के आबरण मनुष्य को निरंतर कर्म मे लगा के रखते हैं। जबकि ये तीन जैसे की मन, बुद्धि, और संस्कार को शक्ति आत्मा से ही मिलती हे। जैसे की मालिक से शक्ति पा कर नौकर ताकतबर बन जाता है ऐसे ही प्रकृति मनुष्य को आपने बस मे कर रखा है। तो मनुष्य जबतक ये स्थूल जगत के सुख साधन पाने मे फसा रहेगा तबतक उसको ये प्रकृति कर्म मे लगाके रखेगी और मनुष्य आपने आप** को **बेबश महसूस करेगा क्यूँ वो मालिक से नौकर बन गया हे। अब कर्म की गति के बारें मे समझना पड़ेगा। एक बार वो कर्म के चक्र मे फसे तो कैसे उसकी गति होती है। तो मनुष्य जैसे जैसे कर्म करता रहता है उसी हिसाब से प्रकृति उसके लिए परिस्थिति सृजन करती है। जैसे की अच्छे कर्म के लिए प्रकृति अच्छी परिस्थिति सृजन करेगी जो की मनुष्य के लिए सुख दायक होगी ! और बुरे कर्म के लिए प्रकृति खराब परिस्थिति सृजन करेगी जो की मनुष्य के लिए दुख दाई हे। ये परिस्थिति जो मनुष्य के सामने आती रहेती है इसको भाग्य कहते हैं। तो कर्म से ही भाग्य बनता हे। और भाग्य को जो जिस तरह उपयोग करेगा तो उसका भविष्य उसी हिसाब से ही बनेगा। जैसे एक ब्यक्ति का भाग्य बनता है ऐसे ही एक राज्य का भाग्य उस राज्य के लोग मिल कर बनाते हैं ऐसे ही एक देश का भी भाग्य बनता है। एक राज्य या देश के**

बेहद की परमशांति

लोगों के सम्मिलित कर्म सकारात्मक हे तो उस देश या राज्य मे अच्छे दिन आएंगे और नाकारत्मक हे तो बुरे दिन आएंगे। इससे क्यूँ ये प्राकृतिक बिपर्जय आता है ये समझा जा सकता हे। तो सोच से कर्म बनता है और कर्म से भाग्य बनता है। तो सब ताकत आपकी सोच मे है। तो साकारात्मक सोच आपके कर्म और भाग्य दोनोको बदल देगा।

हम अभी सिर्फ एक मनुष्य के कर्म के बारे मे चर्चा करेंगे। कर्म की गति कैसे मनुष्य के जीबन मे प्राभाब डालती है ये जानने के लिए श्रीमद भगवत गीता के निम्न श्लोक को समझना होगा।

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः ।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ ४-१६॥

कर्म क्या है और अकर्म क्या है - इस प्रकार बिद्वान भी मोहित हो जाते हैं। अतः वह कर्म तत्त्व में तुझे भलीभाँति कहूँगा , जिसको जानकार तू अशुभ (संसार बंधन) से मुक्त हो जाएगा।

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥ ४-१७॥

कर्म का तत्त्व भी जानना चाहिए और अकर्म का तत्त्व भी जानना चाहिये तथा विकर्म का तत्त्व भी जानना चाहिये ; क्यूँ की कर्म गति गहन है अर्थात समझना बड़ा कठिन है।

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

तो कर्म तीन तरह के है अच्छा कर्म या कर्म , बुरा कर्म या विकर्म, और अकर्म। अच्छा कर्म सकारात्मक है , बिकर्म नकारात्मक है, अकर्म का इन दोनों से कोई संबंध नहीं है। तो जो कर्म करने से लोगों को सुख की प्राप्ति होती है ये कर्म है जैसे की दान देना , गरीबों को खाना खिलाना इत्यादि। कर्म करने के समय मनुष्य के सोच सकारात्मक होती है तो वो तब दूसरे लोगों की भावना का ख्याल रखता हे और किसी के मन को कष्ट ना आए इसका ख्याल रखती है। जो कर्म दूसरे मनुष्य या प्राणी को कष्ट पहुंचाते हे वो विकर्म है जैसे की किसी गरीब को परिशान करना। बिकर्म करने के समय मनुष्य की सोच नकारात्मक रहती है और वो अपने स्वार्थ के अलावा किसी के बारे मे नहीं सोचता है। कर्म से पुण्य होता है और बिकर्म से पाप होता है। तो पाप पुण्य के कारण आपके सोच या कर्म हे जो की आपका भविष्य का भाग्य निर्धारित करता है। पाप और पुण्य ये सब इस संसार के बंधन है क्यूँ की आप प्रकृति के बस मे रहकर सुख या दुख भोगना चाहते हो। अकर्म पाप और पुण्य से ऊपर हे जो ना पाप बनाता है न पुण्य बनाता हे ये आपको कर्म बंधन से छुटकारा देता है। अकर्म आपका कर्तव्य है जैसे की एक सैनिक अपने देश के लिये अपने स्वार्थ भूल कर देश के लिये लढ़ाई करता है। अकर्म मे कोई स्वार्थ निहित नहीं होता है और ये भविष्य भी निर्माण नहीं करता। अकर्म की महत्त्व श्रीमद भगवत गीता मे बहुत अच्छी तरह समझाया गया है जो यहाँ लिखने के लिए समय नहीं है। जो महान संत हैं योगी हैं सिर्फ वही

अकर्म कर सकते हैं। अकर्म मनुष्य को योगी के स्तर मे ले जाता है। अकर्म जो करता है वो सुख या दुख की परवाह नहीं करता। मूल अर्थ को जो समझ जाएगा तो वो हर परिस्थिति को अपने बस मे करके प्रतिक्रीया करेगा और अशुभ कर्म करने से बच जाएगा। मूल अर्थ संक्षिप्त मे दिया जाता है।

जो परिस्थिति जिसके सामने आती है वो उसके लिए खुद जिम्मेदार है। हर मनुष्य अपना भाग्य खुद बनाता है अपने सोच और कर्म द्वारा।

1- जिस कर्म द्वारा एक मनुष्य की चेतना का विस्तार होता है जैसे की कोई कर्म करने से पहले अपने अलावा दूसरे के बारे मे सोचता हे और दूसरे को सुख देने का प्रयास करता है तो उसको अच्छा कर्म या पुण्य कहते हैं।
2- जिस कर्म द्वारा एक मनुष्य की चेतना संकुचित होती है और कर्म करने के समय वो आपने स्वार्थ के अलावा और कुछ नहीं सोचता तो उसे विकर्म या पाप कहते हैं।
3- जो सुख या दुख की परवाह ना करते हुए निस्वार्थ भाव से अपने कर्तव्य का पालन करता है वो अकर्म है ये मनुष्य को जन्म ओर मरण के चक्र से मुक्ति देता है।

बेहद की परमशांति

ये सब कर्म मनुष्य के जीवन मे किस क्रम मे आते हैं। ये भी तीन प्रकार के हैं -संचित कर्म , प्रारब्ध, क्रियमान कर्म। आत्मा के तीन आवरण मे जैसे मन, बुद्धि, और संस्कार मे ये कर्म अपने आप रेकॉर्ड या लिखित हो जाता है। बहुत जन्म से ऐसे बहुत पुराने अच्छे या बुरे कर्म रेकॉर्ड आत्मा मे जो पड़ा है उसको संचित कर्म कहते हैं। संचित कर्म बैंक मे स्थाई धरोहर जैसे है , जैसे संचित कर्म समय के साथ आपके सामने आता है तो उसको प्रारब्ध कहते है। स्थाई जमा जब परिपक्व हो जाता है तब वो प्रारब्ध मे परिणित होता है। वर्तमान परिस्थिति को प्रारब्ध कहते हैं। और बर्तमान परिस्थितों को संभालने के लिए जो हम प्रतिक्रिया करते हैं उसको क्रियमान कर्म कहते हैं। प्रतिक्रिया हमारे हाथ मे हैं हम इसमे कर्म या विकर्म या अकर्म कर सकते हैं। कर्म या विकर्म फिर से संचित कर्म मे चला जाएगा और अकर्म हमे इस कर्म बंधन से मुक्त करेगा। ये हो गया कर्म के सिद्धांत. कर्म प्रकृति के साथ हमे जोड़ता है और हर कर्म प्रकृति मे ही होता है। अकर्म प्रकृति से हमे मुक्त करता है।विज्ञान के नियम के अनुसार भौतिक संसार मे हर क्रिया के समान और विपरित प्रतिक्रीया उसी वक्त होती है; लेकिन मनुष्य जीवन मे कर्म की प्रतिक्रिया के लिए समय प्रकृति निर्धारित करती है। तो कौन से समय मे कौन सी कर्म की प्रतिक्रिया मनुष्य के सामने आयेगी ये किसी कों पता नहीं इसीलिए श्रीमद भगवत गीता मे कर्म की गति को अति गहन कहा गया है।

बेहद की परमशांति

जब कर्म के सिद्धान्त का पता चल गया तो उससे कैसे निकलें। बहुत लोग ग्रह पुजा करते हैं, किसी संत या गुरु के पास जाते हैं, देव देवियों की पुजा करते हैं लेकिन इन सबसे कोई फायदा नहीं। क्यूँकी तुम्हारे कर्म की रेकॉर्ड को कोई दूसरा ब्यक्ति जैसे की ग्रह या गुरु या देव देवियाँ कैसे परिवर्तन या मिटा सकते हैं जबकि वो खुद कर्म बंधन मे पड़े हुएँ हैं।इसलिए अपना कर्म खुद सहना पड़ेगा क्यूंकी वो हमारे कर्म की प्रतिक्रिया ही है। कर्म की प्रतिक्रिया प्रकृति में होती है तो हमे प्रकृति के मालिक के पास जाना पड़ेगा। प्रकृति अनंत है , अनंत की मालिक को बेहद की बाप या परम पिता या ईश्वर कहते है। जैसे हमारे संबंध यदि प्रधान मंत्री यानि देश की मालिक साथ हो तो कभी भी कोई काम मे परिशानी आता है तो हमे उस संबन्ध से काम मे राहत मिल जाती है। ऐसे ही आप भी यदि बेहद के बाप के साथ संबंध रखेंगे तो आपको कर्म बंधन से राहत मिलेगी।

बेहद के बाप तक पहुचने के लिए यूट्यूब.कोम/अनंत98251 देखिये

संपादक: ज्योति प्रकाश

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

योग क्या है और कैसे करें ?

योग का मतलब है जोड़ना?तो हमे जोड़ने के लिए पहले पता होना चाहिए की किसके साथ जोड़े और कहाँ ? हम तभी जोड़ पाएंगे जब हमे लगेगा की हम बिछड़ गयें हैं। मानलों हम किसी बहुत नजदीकी रिश्ते जिसको हम बहुत प्यार करते हैं और वो हमसे बिछुड़ जाता है तो हमे उसकी दिन रात याद आती है तो जब हम उसे याद करते हैं तो हम उससे जुड़ जाते हैं। सबसे अच्छा उदाहरण ये है की एक छोटा बच्चा जब अपनी माँ से दूर हो जाता है तो वो आपने माँ की याद में रोता है तो वो अपनी माँ के साथ योग कर रहा है।जैसे बच्चा रोता है तो माँ भी तुरंत उसकी तरफ ध्यान देने की कोशिश करती है चाहे कितना भी काम क्यूँ न हो। तो दोनों ब्यक्ति के बीच मे कितना भी दूरी हो लेकिन हम उसे याद करके हम अपने आप को उसके साथ जोड़ सकते हैं। जब हम किसीको बहुत याद करते हैं तो हमारे आस पास के माहोल को भी नजर अंदाज कर देते हैं क्यूँ की हमारे ख्याल मे सिर्फ वही रहता है जिसको हम याद करते हैं। ऐसे किसिके साथ जोड़ने को योग कहते हैं। योग करने के समय हम शरीर से नहीं मन से जोड़ते हैं। तो शरीर किसी भी स्थिति में हो लेकिन हम योग कर सकते हैं। ये जो ऊपर बताया गया ये योग की बुनियाद हैं। इसके बिना आप कोई भी योग कर नहीं सकते हैं और करते भी हैं तो वो योग नहीं हैं।

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

तो योग करना एक हमारा स्वभाविक स्थिति है। उसके लिए हमे ज्यादा परिश्रम या कसरत करने की जरूरत नहीं है। अब हमे समझना चाहिए की हम किससे बिछुड़ गयें है। इसके लिए आपको आध्यात्मिक ज्ञान की जरूरत है या ऐसे आदमी और किताब के पास जाना पड़ेगा जिसके पास ठीक ठीक ज्ञान है और आपको उचित आध्यात्मिक ज्ञान दे सकता है। आज के समय मे इंटरनेट के माध्यम से बहुत सारे आध्यात्मिक ज्ञान का विस्तार हो रहा है। और अभी बहुत सारे आध्यात्मिक गुरु भी हैं जो ज्ञान बाँट रहें है।अब हम थोडसा विस्तार से समझते हैं। हमारा शरीर जो हमे दिखता है वो भौतिक शरीर है और जो हमारे शरीर को चलाता है वो दिखता नहीं उसको आत्मा या शरीरी (श्रीमद भगवत गीता मे कहा गया है) कहते हैं। तो श्रीमद भगवत गीता के एक श्लोक की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है। वो श्लोक नीचे दिया गया है।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २-२०॥

ये शरीरी या आत्मा न कभी जन्मता है और न मरता है तथा यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला नहीं है। यह जन्म रहित नित्य निरंतर

www.youtube.com/anant98251

रहनेवाला ,शाश्वत और अनादि है। शरीर के मारे जाने पर भी ये मारा नही जाता। तो ये हमारे शरीर जैसे हमारे भौतिक माँ और बाप से आया है ऐसे ये हमारा आत्मा के कौन बाप है। जैसे हम अपनी भौतिक माँ बाप को देख सकते हैं लेकिन आत्मा के माँ बाप को देख नहीं पाते। आत्मा शाश्वत है तो उसकी रचियता भी शाश्वत होगा। जैसे भौतिक शरीर नाशबान है ऐसे ही भौतिक माँ बाप भी नाशबान हैं।तो ये हमारे आत्मा की रचयिता को पहचानने के लिए हमे आध्यात्मिक ज्ञान की जरूरत है। आत्मा के अंदर मन , बुद्धि, और संस्कार रहता है। तो सब अपनी संस्कार के और बुद्धि के हिसाब से जीबन व्यतीत करते हैं और कर्म से जुडते हैं। तो ये संस्कार और बुद्धि के द्वारा मन सोचता रहता हैं। तो जैसे शरीर को संस्कार भौतिक माँ बाप देते हैं। ऐसे ही आत्मा मे जो मूल संस्कार होगा वो उसकी रचयिता से आता है। जैसे जैसे आत्मा बहुत शरीर बहुत जन्मों मे धारण करता है तो ये मनुष्य आत्मा की मूल संस्कार को भूल जाता है। उचित आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा मनुष्य अपनी आत्मा के मूल संस्कार को याद कर सकता है और वो अपने रचयिता को पहचान लेता है। तो जैसे जिसके संस्कार है वैसे ही उसकी खोज होती है। इसलिए श्रीमद भगवत गीता के अंतिम अध्याय के एक श्लोक यहाँ दिया जाता है।

अर्जुन उवाच ।

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥ १८–७३॥

अर्जुन बोले हे अच्युत ; आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है और में स्मृति प्राप्त कर ली है। में संदेहरहित होकर स्थित हूँ। अब में आपकी आज्ञाका पालन करूंगा।

तो उपोरक्त श्लोक से ये पता चलता है के 18 अध्याय तक श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते रहे और अंत मे अर्जुन की स्मृति या याद आ गया की वो कौन है। ऐसे ही हम लोगों को भी याद आ जाना चाइए की हम कौन है तो हमे पता चल जाएगा की हम कहांसे बिछड़ गए हैं। जैसे ही हमे पता लग जाएगा की हम कहांसे बिछड़ गए हैं हमारा योग आपने आप लग जाएगा।

जैसे गो माता के स्तन से अपने बछ्ड़े को देखे कर आपने आप दूध निकल आता है क्यूँ की वो आपने बच्चे को बेहद प्यार करता है। ऐसे ही हमारा रचयिता हमे बेहद प्यार करता है क्यूँ की हम उससे बहुत दिनो से बिछड़ गए हैं। हमे सिर्फ उसको याद करना बाकी है तो प्यार का दूध आपने आप बहता जायेगा। तो योग करना बहुत आसान है लेकिन उचित ज्ञान की आवश्यकता है और अपने असली बाप या माँ को पहचान करना है। इसके बिना बाकी सब ब्यर्थ की चेष्टा है।

हमारा मन क्यूँ इधर उधर भटकता है? क्यूँ की जब हम असली बाप को नहीं पहचान पाते तो उसके प्यार को भी जान नहीं पाते। इसलिए

बेहद की परमशांति

हमारा मन इस दुनिया के स्थूल चीजो को प्यार कर बैठता और असली प्यार से वंचित रह जाता है। तो सभी योग में है ;कोई ये स्थूल चीजों (कांचन, कामिनी, किर्ति) से प्यार करता है और उसिके याद मे रहेता है और कोई अपनी असली बाप यानि परमात्मा या बेहद की बाप को याद करता है। जैसे ही ज्ञान समझ मे आजाएगा तो आप इस स्थूल चीजों से आपने आप दूर हो जाएंगे और बेहद की बाप के पास चले जाएंगे और वहाँ मन परमशांति को प्राप्त करेगा।

बेहद की परमशांति

मृत्यु से अमर तक की रहस्य

सृष्टि एक रहस्य है और इस रहस्य को समझने के लिए कई गुरु, ऋषि, संत, फकीर, अवतार (हिंदू परंपरामें) समय-समय पर पृथ्वी पर आए थे। ऋषियों, मुनियों, संतों, अवतारों आदि द्वारा प्रसारित ज्ञान से मानव समाज बहुत ही उजागर हुआ है और समाज की संस्कृति तदनुसार परिवर्तन होता गेया। रहस्य अंधेरे के समान हे, लेकिन अंधेरे जब प्रकाश के माध्यम से सुलझाया जाता है तो इसे ज्ञान कहा जाता है। इसलिए रहस्य के विभिन्न स्तर और ज्ञान के विभिन्न स्तर हैं। तो रहस्य का अंत कहाँ है? और ज्ञान का अंत कहाँ है?इस स्थूल संसार मे मृत्यु अनिवार्य हे ये सभी जानते हुए अंजान बने हुएँ है ओर मृत्यु के इंतेजार मे बैठे हुए हैं।

सभी धर्मों ने एक बात पर महत्त्व दिया हे और वह हे आत्मा। सभी अवतार (हिंदू परंपरा में) और सभी गुरुओं / संन्यासी / फकीर / ऋषि आदि जो धरती पर आए, वे भी आत्मज्ञान पर जोर दिया? तो सभी जीवित प्राणी के दो भाग हे उस में से एक दिखता है, अर्थात् शरीर और अन्य अदृश्य है वो हे आत्मा। आत्मा शरीर का संचालन कर रही है लेकिन जैसा कि सभी जीवित प्राणी अपनी आत्मा से अवगत नहीं हैं, लेकिन उनके शरीर के बारे में पूरी तरह से अवगत हैं। तो शरीर के बारे में जागरूकता को शरीर चेतना या स्थूल चेतना कहा जाता है और आत्मा की जागरूकता को आत्म चेतना कहा जाता है। उपरोक्त पहलू को श्रीमद भागवत गीता, बाइबल,

बेहद की परमशांति

कुरान, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जैसे सभी पवित्र आध्यात्मिक ग्रंथों में विस्तार से वर्णित किया गया है और विभिन्न युगों (चार युग) में विभिन्न घटनाओं के रूप में पुराणों (हिंदू अवधारणाओं में आध्यात्मिक ग्रंथों) में भी समझाया गया है। मानव भी पृथ्वी की अन्य जिवित प्राणी की तरह है, जब तक कि वह उसकी आत्मा से अवगत नहीं हुआ हैं। येहुदी, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम (मुस्लिम) जैसे धर्मों पिछले 3000 से 4000 वर्षों मे अस्तित्व में आया हे, लेकिन उस अवधि से पहले धरती पर विभिन्न धार्मिक समूहों या विभाजनों की कोई ऐसी अवधारणा नहीं थी।लगभग 5000 साल पहले मानव जाति पर्यावरण के साथ संतुलन में रह रहा था और वह उनका धर्म था, जो स्पष्ट रूप से हमारे हिंदू पवित्र ग्रंथों(वेद, उपनिषद, पुराणों) में दर्शाया गया है। हिन्दू परंपरा में वेद, उपनिषद, पुराणों उस समय ऋषियों /मुनियों द्वारा कल्पना की गई थी जो उस समय के आध्यात्मिक वैज्ञानिक थे।तब ऋषियों और मुनियों के पास प्रचण्ड आत्मशक्ति थी जिसके द्वारावे अपनी चेतन शक्ति को बहुत उच्च स्तर तक ले जा सकते थे जो कि इस सौर मंडल या आकाशगंगा से भी परे जा सकते थे और वहाँ की सृष्टि को देख सकते थे। इस वजह से वे हिंदू ग्रंथों (वेद, उपनिषद, पुराणों) में सौर मंडल और आकाशगंगा के सृजन की इतिहास और भूगोल के विवरण समझाया गया हे बिभिन्न कहानी के माध्यम से। परंतु बर्तमान समय मे मानब आत्मा मे इतना शक्ति नहीं है की वो उपरोक्त ग्रंथों की मूल अर्थ को समझ पाए। आधुनिक मनुष्य समाज उन ग्रंथोंको (वेद, उपनिषद,

पुराणों)पौराणिक कथाकहते हें और उसीमे लिखी गई आध्यात्मिकबिज्ञान को समझ नहीं पा रहें हे।जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता गया , समय समय पर शक्तिशाली व्यक्तित्व जो की दिव्य शक्तियों के साथ संपन्नथे, धरती पर आने लगे और कई धर्मो और कई आध्यात्मिक संस्था इस धरती के ऊपर स्थापन किए। उन शक्तिशाली व्यक्तित्व को इस मानव समाज मे धर्म पिता या परमेश्वरके दूत या पैगामबर कहा गेया। मानवसमाज में आध्यात्मिक ज्ञान, शांति, सद्भाव स्थापित करना सभी धर्मों के आधारभूत सिद्धांत है।

लेकिन आज अधिकतम संघर्ष केवल धर्म की वजह से है और अभी तक धार्मिक विवाद के कारण अधिकतम युद्ध हुए हैं और अधिकतम संख्या में केवल धार्मिक मतभेदों के आधार पर ही मृत्यु हो चुकी है और हो रही है। आजकल लोगों के एक विशेष समूह, जो धर्म के अंतर में या विचारों में अंतर के नाम पर क्रूरता से दूसरे समूह लोगों को मारने के लिए झिझक नहीं रहे हैं, उन्हें आतंकवादी कहा जाता है और यह दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। कई धर्मों के अलावा, वर्तमान में भारत में कई गुरु या आध्यात्मिक स्वामी हैं और साथ ही अन्य देशों में भी आध्यात्मिक विज्ञान की शिक्षाओं के अपने संस्करण फैले हुए हैं, जो लाखों लोगों द्वारा उनकी पसंद और समझ के अनुसार अनुकरण कर रहें हैं। आजकल अपने भगवान या गुरु को निष्ठा का सबूत दिखाने के लिए अधिकतर राशि भगवान के नाम पर मंदिरों में और आध्यात्मिक संस्था (आश्रम कहा जाता है) मे दान के रूप

में दिया जाता है। यदि यह सभी दान में एकत्र हुए सभी निधियों को जोड़ा जाए तो भारत को गरीबों के विकास के लिए कोई आर्थिक सुधार की आवश्यकता नहीं होती है। बहुत सारे धर्मों, गुरुओं, मंदिरों के बावजूद अपराधमें वृद्धि हो रही है, असहिष्णुता बढ़ रही है, और भौतिकवादी जीवन बढ़ रहा है। कोई भी शांति में नहीं है, लेकिन हर बौद्धिक(intellect) शांति की बात कर रहा है और शांति स्थापित करने के लिए अलगअलग सिद्धांत प्रदान कररहा है। कुछ महिलाएं सशक्तिकरण के लिए काम कर रही हैं, कुछ समूह किसानों के लिए काम कर रहा है, कुछ बच्चों के लिए कर रहें है, कुछ पर्यावरण के संरक्षण के लिए कर रहें हैं, लेकिन अगर कोई दैनिक समाचार पत्र या समाचार चैनल को देखता है तो अपराध का प्रकार इतनी क्रूर और क्रूरतापूर्ण है कि एक शांतिप्रिय मानव के दिल मे डर, अनिश्चितता भर देता है। आजकल मानव सेवा के नाम पर बहुत सारे अस्पतालो का निर्माण किया जा रहा है,लेकिन मौत के भय को उत्प्रेरित करके मानव के मनोविज्ञान से छेड़छाड़ करके कारोबार करने की एक साजिश है। आज के समय मे सभी सफल व्यवसाय आधारभूत दो चीज़ेंपर निर्भर हे प्रथम शान तथा आरामदायक जीवन की प्रलोभन द्वितीय मृत्यु का डर। आज की शिक्षा प्रणाली(मेडिकल,इंजीन्यरिंग,मैनेजमेंट) उपरोक्त चिंता धाराओं को बढ़ावा देता हैजो इस उपोरक्त कार्य मे माहीर होगा उसिकों होशियार माना जाएगा। इसलिए आज के समयमे इस धरा के ऊपर किसी को भी सफल ब्यबसायिक बनने के लिए दो चीजोंमे सक्षम होना

चाहिए प्रथम लोगों को मृत्यु के दर दिखाना द्वितीय लोगों को शान तथा आरामदायक जीवन की प्रलोभन दिखाना। आज के मानव समाज स्थूल दुनिया मे इतना डूबा हुआ है की उसको आत्मा की अस्तित्व एबम उसकी दिव्यता के बारे में कल्पना भी नहीं कर सकता हे। स्थूल चेतना या बुद्धि का मतलब हे की वो मनुष्य सिर्फ जो इस चर्म चक्श्यू मे दिखता हे उसिके ऊपर बिस्वास करता हे। ये स्थूल दुनिया सीमित हे। जिसकी एक सीमा हे वो असीमित नहीं हें उसी कों हम हद कहतें हैं। जो असीमित हे और ये स्थूल दुनिया के दायरे से बाहर हे वो बेहद हे। बेहद को हद के विपरित समझ सकते हे जो अनंत हे। इसलिए स्थूल चेतना या बुद्धि वाले मनुष्य के बिचार या सोच सीमित होता हे। आज के समय मे इतना ज्यादा जनसंक्ख्या मे बृद्धि हो गयी हे की इस स्थूल दुनिया मे एक छोटी सी चीज पाने के लिए इतनी प्रतिस्पर्धा हे की हर मनुष्य अपने आपको असुरक्षित महसूस कर रहा हे।ये स्थूल दुनिया सीमितहे और हर बस्तु मे अभाब हे और ये असुरक्षा का जन्मदाता हे। अपना अस्तित्व खो देने का डर,असुरक्षा महसूस करना,स्थूल भोग करने का लालसा सभी प्रकार की अपराध या क्रूरता का मूल कारण हे। उपरोक्त सभी कारकों का जन्मदाता स्थूल दुनिया ही है। इसी कों हद की दुनिया कहा जाता हे जहां हम रहने के लिए इतना संघर्ष कर रहें हे। हम सभी सुखों की खोज इसी दुनिया मे कर रहें हैं। हम जब स्थूल दुनिया की सीमा को पार करेंगे तो असीमित दुनिया मे कदम रखेंगे उसको बेहद की दुनिया कहेंगे। उसके लिए बेहद का

ज्ञान चाहिए जैसे हम स्थूल दुनिया मे मेडिकल या इंजीन्यरिंग की पढ़ाई करते हैं।

सभी आध्यात्मिक ग्रंथ, धार्मिक पिता, संत, फकीर ने पृथ्वी पर शांति ,प्रेमस्थापन करने की कोशिश की, लेकिन मानव प्रजातियों की सीमित(हद की) समझ के आधार पर धरती पर विभाजन होता गया और अभी भी जारी हे। अंत में अब इस धरती में कई सीमाएं हैं वो धर्म, जाति, भाषा,आदि चीजों पर आधारित हे। विश्व की आबादी एक खतरनाक दर से बढ़ रही है जो वर्ष 1817 में लगभग 9 8 करोड़ थी, वर्ष 1917 में 1 9 0 करोड़ पहुंची, वर्ष 2017 में 750 करोड़ हो गेई और भारत की आबादी भी उसी हिसाब से बढ़ती रही और आज भारत पृथ्वी मे द्वितीय स्थान मे हे। जनसंख्या में वृद्धि और प्रकृति द्वारा प्रदत्त सीमित भौतिक संसाधनों के साथ पृथ्वी पर मानव अस्तित्व का बना रहना चिंता की बिषय हे जो की सभी स्तर की बौद्धिक समझ रहें है लेकिन कुछ कर नहीं पा रहें हैं।जिस तरह हम आज का जीबन व्यतीत कर रहें हैं उस हिसाब से ये धरती 100 साल से ज्यादा कायम नहीं रह सकती हे,हाल ही में एक प्रसिद्ध बैज्ञानिक जिनका नाम Stephen Hawking ये शब्द बोले थे। तब हम कहाँ जाएंगे? और ये लड़ाई किसके लिए ?

कोई भी मंदिर, चर्च, या मस्जिद या कोई आध्यात्मिक प्रतिष्ठान या कोई गुरु या वैज्ञानिक पृथ्वी पर इस मानव जाति को विलुप्त होने से बचाने में असक्षम होगा यदि हम इस तरह से जीवन व्यतीत करेंगे। हिंदू पुराणों में

<u>बेहद की परमशांति</u>

यह कहा जाता है कि वर्तमान समय को कलियुग कहा जाता है और इसकी अवधि लगभग 4,32,000 साल है, इसके केवल 5000 साल बीत चुके हैं, इसलिए कलियुग में और 4,27,000 साल बचे हैं। यह भी कहा जाता है कि कलियुग के अंत में कल्कि अवतार (हिंदू भगवान में विष्णु का अवतार) पृथ्वी पर प्रकट होते है और सभी असुरों या राक्षसों या नकारात्मक लोगों को दमन करते है और केवल संत या सकारात्मक लोग पृथ्वी पर सत्य युग स्थापित करने के लिए बने रहेते हे। अगर वर्तमान परीस्थिति कायम रहेती हे फिर4,27,000 साल बाद कल्कि अवतार पृथ्वी पर आएंगे तो पृथ्वी अस्तित्व में नहीं होगी इसलिए कल्कि अवतार को अपने मिशन को पूरा करने का कोई मौका नहीं मिलेगा। **इसलिए इस पृथ्वी पर एक महत्वपूर्ण समय चल रहा है जब परिवर्तन होना जरूरी हे, पृथ्वी के अस्तित्व के लिए।** जब भी परिवर्तन होता है, परिवर्तन की सुविधा के लिए कुछ नया विचार के साथ नया व्यक्तित्व पृथ्वी पर अस्तित्व में आते है। यह सृष्टि का नियम है जो समय और स्थान के साथ बदलता है।

हिंदू अवधारणा में समय चक्र को चार युग मे विभक्त किया गया हे जैसे कि सत्य युग (स्वर्ण युग), त्रेता युग (सिल्वर एज), द्वापर युग (कॉपर एज) और कली युग (आयरन आयु),ये समय चक्र स्वयंको दोहराता रहता हे जबतक एक ब्रह्मा के समय काल का अंत न हो जाए। पृथ्वी के ऊपर युगों का परिवर्तन पर्यावरण की स्थिति (धरती, वायु, जल, अग्नि और आकाश जैसे 5 तत्व की शुद्धता) और धरती पर मानव आत्मा की

मनोवैज्ञानिक / मानसिक स्थिति के आधार पर होता है। प्रत्येक युग के अंत के साथ पृथ्वी की स्थिति खराब हो जाती है और खराबी का शिखर काली युग में पहुंच जाता है। समय के साथ, सौर मंडल, आकाशगंगा, ब्रह्मांड, जैसे अंतरिक्ष में विभिन्न स्तरों में सृजन और विघटन का कानून बदलता रहता हे। एक विशेष समय और स्थान पर निर्माण / विघटन के कानून को समझने के लिए आत्मा में गहरा अंतर्दृष्टि और जबरदस्त शक्ति होनी चाहिए। धरती पर यदि कोई मृत व्यक्ति अब जीवन में वापस लाया जाए जो इस धरती पर 100 वर्ष पूर्व था ,तो आज की सामाजिक संरचना और प्रौद्योगिकी के विकास, पर्यावरण में शुद्धता की गिरावट आदि के कारण मानव जाति के जीवन के तरीके को समझ नहीं पाएगा । परिवर्तन इस धरती के जीवन का एक अपरिबर्तनीय नियम हे। यह उल्लेख करने योग्य है कि अवतार भगवान राम पृथ्वी पर त्रेता युग के अंत में आए थे, जब त्रेतायुग द्वापर युग में परिबर्तन हो रहा था। त्रेता युग मे पृथ्वी के ऊपर जीबन शैली तथा निर्माण / विघटन के कानून,द्वापर युग से पूरी तरह अलग था। त्रेता युग मे लोग शांति प्रिय थे जैसे की उस समय धन, संपती, जमीन के लिये कोई लड़ाई होते हुए नहीं देखा गया। रामायण मे जब श्री राम बनबास गए तो उनके पीछे भरत भी बन मे गए और श्री राम को लौट आने के लिए निवेदन किया था जबकि द्वापर युग में एक छोटी सी जमीन के टूकडे के लिए महाभारत युद्ध हुआ था। इसे पता चलता है समय के साथ कितना बदलाव आता हे।जब त्रेता में एक

बेहद की परमशांति

भाई दूसरे भाई के लिए सब कुछ छोडने को तयार था द्वापर मे एक जमीन के लिए एक भाई दूसरे भाई को मारने के लिए तत्पर था। ऐसा क्या हुआ धरती के ऊपर जो की एक भाई दूसरे का दुश्मन बन गया। आज के समय मे कोई किसी का भाई ही नहीं रहा। जब आप समझ जायेंगे की ये परिबर्तन क्यूँ हो रहा है तो आप ये समझ जाएंगे की अवतार धरती पर क्यूँ और कब आते है। त्रेता युग मे श्री राम के द्वारा कौन काम करवा रहा था। लोग शरीर को भगवान मान लेते हे जो की नश्वर हे। जैसे त्रेता युग का अन्त हुआ द्वापर युग का आगमन हुआ और श्री राम नहीं रहें। द्वापर युग के अन्त मे श्री कृष्ण का आगमन हुआ तब इस धरती मे मानव समाज की स्थिति बहुत खराब हो चुकी थी ये सब महाभारत मे पढ़ा जा सकता हैं। श्री कृष्ण ने द्वापर युग मे बहुत सारे चमत्कार किए थे तथा धर्म की स्थापना के लिए उन्होने अपनी पूरी शक्ति लगाई थी। द्वापर युग मे श्री कृष्ण के द्वारा कौनसी शक्ति इतना चमत्कार कर रहा था। श्री राम को मर्यादा पुररूषोत्तम कहा जाता है जबकि श्री कृष्ण को छलिया कहा जाता है।ये दोनों अवतारों के अंदर एक ही शक्ति काम कर रही थी। लेकिन एक को हम मर्यादा पुरुषोत्तम कह रहें हैं ओर एक को छलिया कह रहें हैं। इसी से पता चलता है समय के साथ अवतार बदल जाते हैं और उनका काम करने का तरीका भी बदल जाता है क्यूँ की पृथ्वी के ऊपर वायुमंडल बदल जाता है जो की पाँच तत्त्व के (पृथ्वी, जल, बयु, अग्नि, आकाश) होते हैं। ये वायुमंडल के शुद्धता किसके ऊपर निर्भर हे?

बेहद की परमशांति

क्या ये वायुमंडल अपने आप बदल जाता हे? ये जो शक्ति समय समय पर धरती के ऊपर किसी मनुष्य के शरीर मे प्रकट होती हे वो आज कहाँ हे। क्या आज के समय इतना अच्छा हे की कोई परिवर्तन के जरूरत नहीं है? आज जो सब घाटनायें पृथ्वी के ऊपर घट रही हे वो सब क्या मानव समाज के लिए अच्छी हे। यहाँ ये सब बोलने की जरूरत नहीं हैं, आप न्यूज़ पेपर या न्यूज चैनेल मे कैसे कैसे न्यूज़ देख रहें हैं उसी से आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं। आज हर आदमी दौड़ मे लगा है बुलंदी पे खड़े होना चाहता है , उसको सब पहचाने , उसके पास सबसे ज्यादा पैसा होना चाहिए। ये सब हासिल करने के के लिए आज का मानव कुछ भी कर सकता हे। हमे इन सबसे ऐसी आदत हो गयी है की सभी गलत चीज हमें अच्छी लगने लगी है। जैसे की टेलीवीजन (TV) पर कितना भी खराब(अनैतिकता और ब्याभिचार से भरपूर) सीरीयल हो फिर भी हम अपने आप को देखने से रोक नहीं पाते हें ये जानते हुए भी की ये समाज को बिगाड़ रहा हे।और आज मीडिया मे वही सीरियल या न्यूज़ चैनल की सबसे ज्यादा कमाई हे। कोई अच्छी चीज दिखाने या लिखने के लिए कोई तय्यार नहीं हे क्यूँ की वो बिकता नहीं ओर जो अच्छी चीज दिखाना या समझाना चाहता हे उसके पास पैसे की ताकत नहीं। आज के समय मे इतने मंदिर बन चुके हैं ओर इतने धर्म गुरु आ चुके हैं, और ये सब अपनी अपनी संस्था चलाने मे और मेम्बर बढ़ाने मे इतने ब्यस्त हैं की वो भी एक प्रतिस्पर्धा मे बदल चुका है। जैसे की सबसे ज्यादा पैसा कमाने वाला

बेहद की परमशांति

धार्मिक या आध्यात्मिक संस्था कौन सी हे और कहाँ सबसे ज्यादा लोग जाते हैं, उन सबके आधार पर उस गुरु या संस्था की मान्यता बढ़ जाती है। जैसे लग रहा हे की मानव समाज को देख कर भगवान भी रह नहीं पाए और उन्होने सोचा की मै भी प्रतिस्पर्धा मे उतर जाता हूँ। इससे ये लगता हे जैसे मूल धर्म स्थापक या आध्यात्मिक गुरु को इस धरती से जाने के बाद उनको अनुसरण करने बाले इस हद की माया मे फस जाते हैं और बेमतलब की काम मे ब्यस्त रहते हें। जबकि दुनिया दिन पर दिन पतन की और जा रही हे।

जो एक ही शक्ति जिसको हम **"सर्ब शक्तिमान"** या **"परम पिता"** या **"बेहद की बाप"**कह सकते हैं और जो बार बार धरती मे समय समय पर धरती के ऊपर किसी ना किसी शरीर या अवतार के द्वारा काम करवाता रहता है जैसे की त्रेता मे श्री राम के द्वारा और द्वापर मे श्री कृष्ण के द्वारा धरती मे सुधार करने का प्रयत्न किया। लेकिन फिर भी धरती की हालत खराब से खराब होती गयी जैसे की त्रेता मे जो स्थिति थी वो द्वापर मे और बिगड़ गयी और कलियुग बहुत बिगड़ गया। हम मानब जाती के बुद्धि स्थूल दुनिया या हद मे रहती है इसलिए हम शरीर तथा इस दुनिया की मान शान को सब कुछ मान लेते है और हम सबको अपने नजर से देखते है और अपने जैसे मानते है। इसलिए श्री राम, श्री कृष्ण जब धरती पर आए तो,सिवाय कुछ गिने चुने अत्यधिक आध्यात्मिक रूप से विकसित ऋषि या मुनि को छोड़ के सभी लोग श्री राम, श्री कृष्ण के

बेहद की परमशांति

अवतार कार्य के बारे मे अबगत नहीं थे जिसके लिए इतने सारी लड़ाइयाँ हुई और हम सब कलियुग मे आ पहुंचे। इसीलिए ये बोला जाता हे आप नहीं चाहेंगे तो भगबान भी आपकी मदद नहीं कर सकता। इसकी जिम्मेदार हमारी स्थूल (हद) सोच या स्थूल बुद्धि हे जो की बिज्ञान मे बहुत निचले स्तर की कंपन या vibration कहा जाता है। जब तक हमारी बुद्धि हद या स्थूल दुनिया मे फसी रहेगी तो हमे नीचे गिरने से कोई रोक नहीं सकता। इसलिए श्रीमद भगवत गीता के निम्नलिखित श्लोक सबकुछ समझता है।

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ ९–११॥

जो लोग मूर्ख हैं वो लोग मेरा मनुष्य शरीर को देखकर मेरी अवज्ञा या उपहास करते है और वो लोग मेरा सर्ब शक्तिमान या मेरा दिव्य स्वरूप को सोच या समझ नही पाते जबकि मे सारे सृष्टि का संचालन करता हूँ।

उपरक्त श्लोक मे बहुत सीधे साधे शब्द मे बोला गया हे जो लोगो की सोच हद(स्थूल दुनिया) मे पड़ी हुई है वो कितना भी धनबान या समाज मे प्रतिष्ठित या शिक्षित ब्यक्तित्व हो ,वो मूर्ख हे क्यूँ की वो परम पिता या सर्ब शक्तिमान के दिव्य स्वरूप तथा सृष्टि के संचालन करता स्वरूप को पहचान नहीं पा रहा हे।श्रीमद भगवत गीता मे ही इसे सृष्टि का पतन

का कारण भी बताया गया है। जब त्रेता मे श्री राम थे तो उनको मानव समाज समझ नहीं पाया उसका नतीजा हे की द्वापर मे जाना पड़ा जब धरती के ऊपर स्थिति और खराब हुई। श्री राम को यदि कोई द्वापर मे खोज करेगा तो क्या वो मिलेंगे? ऐसे ही यदि कोई श्री कृष्ण को कलीयुग मे खोज करेगा तो क्या वो मिलेंगे?जब जैसी परिस्थिति होती है परम पिता या बेहद का बाप अपनी अनंत शक्तियों से एक छोटा सा अंश द्वारा किसी भी आत्मा तथा शरीर के द्वारा अपना काम धरती के ऊपर करवा लेता है। जैसे ही श्री राम या श्री कृष्ण के अवतार कार्य का अंत हुआ तो उन्हे भी धरती से जाना पड़ा तो वो कैसे मिलेंगे। जब थे तो समझ नहीं पाये जब चले गए तो हम लोग उनकी मंदिर बनाकर उनको मंदिरो मे , रामायण , महाभारत जैसे ग्रन्थों मे खोज रहे है तो वो कहाँ से मिलेंगे।क्यूँ की हमारे बुद्धि स्थूल दुनिया मे सीमित हे इसलिए जो चर्म चक्षयु मे दिखता हे उसी का विश्वास करते हे ओर उसीको ही आज के समय मे बैज्ञानिक दृष्टिकोण बोलते हैं।

जैसे की ऊपर बताया गया की एक युग जब दूसरे युग मे परिवर्तन होता हे तो एक ऐसा ब्यक्तित्व धरती पर दिव्य शक्ति के साथ आता हे जो की पूरे सृष्टि को बदलने की ताकत रखता है। वो उस समय की परिस्थिति और वो दिव्य ब्यक्तित्व की ऊपर निर्भर करता हे वो कैसे परीवर्तन करेगा। अभी जो समय चल रहा है उसको **पुरुषोत्तम संगम युग** कहते हैं और अभी परम पिता या बेहद की बाप या सर्ब शक्तिमान की पूरी शक्ति

बेहद की परमशांति

धरती के ऊपर परिबर्तन की तयारी कर रही है। ये समय बहुत महत्वपूर्ण हे। जैसे की **ब्रह्म कुमारी संस्था** इस बात को पुष्टि कर रही हे। ये बेहद के बाप का क्या अर्थ हे? जब हम हद बोलते है तो एक सीमा को दर्शाता हे। स्थूल दुनिया की एक सीमा हे जैसे की इस दुनिया की सारी चीज एक न एक दिन खत्म होने बाली हे चाहे वो अपना शरीर हो या प्रकृति का कोई भी अंश जैसे खणीज सम्पदा हो।एक निर्धारित समय के अंदर ये सारे स्थूल दुनिया की अंत हो जाती हे। हद के बिपरित बेहद हे जो की कभी खतम नहीं होने बाला हे जिसकी कोई सीमा नहीं हैं। जैसे किसी के भी जन्म दाता को उसका बाप बोला जाता है ऐसे ही इस बेहद की रचियता को उसका बाप बोला जाता हे। हमे जो सृष्टि अपनी इस स्थूल चक्षयु मे देख रहें हे उसके परे की जो सृष्टि हे वो अनंत हे उसी कों बेहद की दुनिया बोला जाता हे। इसको समझने के लिए श्रीमद भगवत गीता के 11 वे अध्याय के 7 नंबर ,8नंबर तथा 47 नंबर श्लोक की सहायता लेता हूँ। जिसमे श्री कृष्ण अपने विराट रूप को अर्जुन के सामने प्रकट किया हैं।

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद् द्रष्टुमिच्छसि ॥ ११-७॥

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥ ११-८॥

हे निद्रा को जीतने बाले अर्जुन , मेरे इस शरीर के एक छोटेसे हिस्से मे चराचर सहित सम्पूर्ण जगत को अभी देख ले। इसके सिवाय तू और जो कुछ भी देखना चाहता हे वो भी देख ले।

परंतु तू इस अपनी चर्म चक्षयु से मुझे देख हि नहीं सकता, इसलिए मे तुम्हें दिव्य चक्षयु देता हूँ , जिससे तू मेरी ईश्वरीय विराट या असीमित सामर्थ्य देख।

श्रीभगवानुवाच ।

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं
रूपं परं दर्शितमात्मयोगात् ।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं
यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥ ११-४७॥

श्री भगबान बोले हे अर्जुन मैंने प्रसन्न होकर अपनी सामर्थ्य से मेरा यह अत्यंत श्रेष्ठ , तेज स्वरूप , सबका आदि और अनंत बिश्वरूप तुझे दिखाया है , जिसको तुम्हारे सिबाय पहेले किसी ने नहीं देखा हे।

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

ये उपरक्त श्लोक से ये पता चलता हे की ये सृष्टि बहुत बड़ी हे ये हमारे स्थूल या हद की सोच के बाहर हे। अब बिज्ञान इस बात का प्रमाण दे रही हे की हमारे जैसे अनंत सौर मण्डल हे वो सब सौर मण्डल हमारे आकाशगंगामे घूम रहें हे। ये भी हे की असंख्य आकाशगंगा ब्रम्हांड मे घूम रही है। बिज्ञान ये भी आज प्रमाण दे रहा हे की अनंत कोटी ब्रम्हांड अंतरिक्ष मे घूम रहा है। ये तो सिर्फ आजतक की बैज्ञानीकों की अनुसनधान हे। ये अकल्पिनीय सृष्टि को बेहद की दुनिया कहा जाता है। हम जिस धरती पर खड़े हैं ये एक सुई की नोक बराबर हे। इसलिए श्री कृष्ण अर्जुन को ये कहा की मेरे एक छोटे से हिस्से से ये चराचर सहित सम्पूर्ण जगत ब्याप्त हे। ये भी कहा की ये तू चर्म चक्षयु से नहीं देख सकता इसके लिए दिव्य चक्षयु चाहिए और दिव्य चक्षयु सिर्फ परम पिता या बेहद की बाप की कृपा से मिल सकता हे। वो भी तभी मिलेगा जब वो प्रसन्न होगा। इससे ये बात बहुत साफ होती है की ये बेहद की सृष्टि अनंत हे और हम उसके समीप कुछ भी नहीं हैं लेकिन हम लोग सबसे बड़ा बनने के लिए दिन रात लगे हुए हें ओर उसको हासिल करने के लिए किसी को भी हम परेशान कर सकते हैं।

आज के समय मे हम भगबान को शास्त्रों मे, पवित्र ग्रंथमे या मंदिरों मे या किसी दरगाह या समाधि मे खोज कर रहें है।जब हम निराश

होते हैं तो कहते है कल्कि अवतार कली युग के अंत मे आयेगा और सभी दुष्ट प्रब्रुती के लोगो की संहार करेगा वो भी कब 4,27,000 साल के बाद। तो जो लोग भगबान को मानते हैं और मर्यादा मे रहते है और कोई ब्याभिचार या छल नहीं करते है तो उनको इस दुनिया के लोग मूर्ख कहते हैं क्यूँ की उन्हे पता है की भगबान आयेगा भी तो इतने साल के बाद का तब तक देखा जाएगा। कोई भी भगबान को या बेहद की बाप को बर्तमान मे खोज करने की कोशिश नहीं करता क्यूँ की किसी को भगबान नहीं चाहिए ये बात भी श्रीमद भगवत गीता मे बहुत स्पष्ट अध्याय 7 श्लोक 16,17 मे कहा गया हे।

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ ७-१६॥

हे भरतबंशियों मे श्रेष्ठ अर्जुन पवित्र कर्म करनेबाले अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु और ज्ञानी - ये चार प्रकार के मनुष्य मेरा भजन करते हैं अर्थात मेरे शरण मे आते हैं ।

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥ ७-१७॥

बेहद की परमशांति

उन चार प्रकार के भक्तों मे मुझमे निरंतर लगा हुआ अनन्य भक्तिवाला ज्ञानी भक्त श्रेष्ठ है क्यूंकी ज्ञानी को में अत्यंत प्रिय हूँ और वह मुझे अत्यंत प्रिय हे।

उपोरक्त श्लोक से ये बहत स्पष्ट हुआ की चार प्रकार की लोग भगवान की शरण मे आते हैं एक है अर्थार्थी उसको अर्थ चाहिए , दूसरा आर्त उसको परेशनी से मुक्ति चाइए , तीसरा जिज्ञासु अपनी जिज्ञासा शांत करना चाहता हे , चौथा ज्ञानी जो सिर्फ भगवान को ही खोज करता हे। इसलिए ये भी हे की भगवान किसी को निराश नहीं करते लेकिन वो ज्ञानी को ही प्यार करते हैं क्यूंकि सिर्फ वो भगबान को पाना चाहता हे। जो सच्चा ज्ञानी होगा वो निरंतर परमात्मा का ही सिर्फ खोज करेगा क्यूंकी स्थूल चीज उसके लिए मूल्यहीन होगी इसलिए ज्ञानी भगवान को वर्तमान मे ही खोज करेगा और सिर्फ उसी को भगबान वर्तमान मे ही मिलेंगे। बाकी तीन प्रकार के लोगोंकों भगबान से ज्यादा अपनी चिंता ज्यादा हे तो ये स्थूल दुनिया मे भगबान को खोज करेंगे जैसे की मंदिर मे या मस्जिद मे या दरगाह मे या समाधि मे या शास्त्रों मे, पवित्र ग्रंथमे क्यूँकी पहले उसका काम होना चाहिए उसको कोई जल्दी नहीं क्यूंकी भगबान आने के लिए 4,27,000 साल बाकी हे। **ज्ञानी भक्त भगबान को वर्तमान मे खोज करेगा और वो सत्य की पीछे जाएगा ओर किसी भी स्थूल चीजो से आपने आप को दूर रखेगा और वो अदृश्य अनंत शक्ति जो**

बेहद की परमशांति

की अनंत सृष्टि की संचालन कर रहा हे उसी के साथ अपने संबंध रखेगा। जो अज्ञानी हे उसको भगबान कभी नहीं चाहिए वो तो एक पशु जैसा हे उसका एक उदाहरण यहाँ दिया जा रहा है। एक बार द्वापर युग मे एक ज्ञानी भक्त ने श्री कृष्ण को पूछा की आप तो अनंत कोटी ब्रह्मांड के मालिक हो और ऊपर की दुनिया तो बहूत अच्छी हे जहां कोई दुख नहीं है ओर वहाँ ऐसी कोई जगह की कमी नहीं है फिर ये धरती पर ये सारे प्राणी को क्यूँ नहीं वहाँ ले जाते हो इस धरती मे इतना कष्ट हे और दिन ब दिन परिशानियाँ बढ़ रहा हे। श्री कृष्ण बोले कोई एक भी जाने के लिए तैयार हो जाए तो मेरा काम धरती पे आसान हो जाएगा। तभी एक सूअर वहा से जा रहा था और श्री कृष्ण ने उस सूअर से पुछा की क्या तुम ऊपर की दुनिया में जाना चाहते हो जहां दुख नहीं हे मृत्यु की भय नहिं हे। उस सूअर ने थोड़ी देर सोचा और बोला मै एक बार मेरे बीबी से सलाह ले लेता हूँ फिर आपको बताऊँगा। जैसे उसने अपनी बीबी को वो सब बताया तो बीबी बोली की हम लोग तो कीचड़ के बिना रह नहिं सकते हे तो ऊपर की दुनिया मे क्या कीचड़ हे यदि हे तभी जाएंगे नहीं तो हम यहीं पे खुश हें । कुछ देर बाद वो सूअर ने आकर श्री कृष्ण को पूछा की क्या ऊपर कीचड़ हे और श्री कृष्ण ने मना कर दिया तो सूअर ने बोला तब उपर की दुनिया मे हम नहीं जाएंगे। हम लोग स्थूल दुनियाँ मे इतना लिप्त हें की हम होश मे नहीं हें और हमे कीचड़ पसंद आ चुका हे अब हमे और कोई अच्छी चीज पसंद नहिं आएगी!

जनसंख्या में वृद्धि की उच्च दर, जैसा कि पहले बताया गया है कि मानव जाति को जीवित रहने के लिए प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई है, इसलिए परमात्मा चेतना की बजाय शारीरीक चेतना की और अधिक बृद्धि हुई है। इसलिए द्वापर युग के बाद पृथ्वी के ऊपर शांति स्थापना के लिए बहुत सारे धर्म गुरु या धरम पिता धरती पर आए जैसे की भगवान येसु (jesus) , पैगंबर मोहम्मद, भगवान बुद्ध ,लेकिन परिस्थितिऔर बिगड़ती गयी। पृथ्वी के ऊपर भार बढ़ रहा है जैसे की जन संख्या बृद्धि, पर्यावरण(पाँच तत्व) दूषितकरण, समाज मे चरित्र का पतन ? कई बुद्धिजीवियों, राजनीतिक नेता , वैज्ञानिकों कोशिश कर लिए लिकिन वो भी समय के साथ लुप्त हो गए।यहां तक कि वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, अंतरिक्ष वैज्ञानिकों, अंतरिक्ष ज्ञान द्वारा अंतरिक्ष मे खोज कर रहें है लेकिन आजतक ऐसी कोई सफलता नहीं मिली हे। इस मामले मे NASA, अमरीका के एक अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र हे जो समय समय पर अपनी खोज की घोषणा करता रहता है। ये बिज्ञान भी स्थूल चेतना की ऊपर आधारित हे इसलिए वो भी कोई समाधान खोज करने मे असफल हे।

तो हमे ये सृष्टि को बचाने के लिए ये हद का ज्ञान कोई लाभ मे नहीं आयेगा इसलिए हमें बेहद की ज्ञान की और जाना पड़ेगा। ये बेहद का ज्ञान किसके पास हे? जिसके पास हे सिर्फ वही दे सकता हे। बेहद का ज्ञान सिर्फ बेहद की रचेयता ही दे सकता हे क्यूँ की जिसने रचना की हे वही सिर्फ उसका नियम जानता होगा। ये बेहद की रचियता मतलब बेहद की

बाप। पहले बताया गया हे ये समय बहुत महत्वपूर्ण हे तो हमे बेहद की बाप की खोज करना चाहिए। जिसके पास आध्यात्मिक ज्ञान के साथ भौतिक ज्ञान की पूरा समझ होगा और इसके अलावा वो जो परमात्मा को सिर्फ खोज कर रहा होगा वही सिर्फ बेहद की ज्ञान को समझ पाएगा और बेहद के बाप को पहचान पाएगा। जो परमात्मा की खोज मे रहेगा उसका जीवन भी बहुत सरल और पवित्र रहेगा।

जैसे की समय के साथ वो बेहद के बाप के काम करने के तरीके मे परिवर्तन आता हे ये पहले बताया गया है तो अभी के समय के हिसाब से बेहद का बाप भी काम करेगा सृष्टि परिबर्तन के लिए। जैसे जो लोग त्रेता युग मे श्री राम को समझ गए थे और जो लोग द्वापर मे श्री कृष्ण को समझ गए थे और उनकी कृपा की पात्र बन गए थे वो लोगों को बहुत लाभ मिला था। ऐसे ही जो अभी बेहद के बाप को समझ जाएगा उसको भी बहुत लाभ मिलेगा। ये मंदिर, मस्जिद, या पवित्र ग्रंथों से ज्ञानी आत्मा की परमात्मा की और खोज शुरू होती है लेकिन आज का मानव समाज ये मंदिर, मस्जिद, या पवित्र ग्रंथों मे अपनी खोज अंत कर रहें इसलिए आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो रहा है और बेहद की ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो रही है।

अब ऊपर लिखी गयी बातों का सारांश ये है की ये स्थूल दुनिया के ज्ञान को बेहद का ज्ञान कहते है जो की सीमित हे और ये हमे और धरती के संरक्षण के लिए कोई मदद नहीं करेगा क्यूंकी ये मानव समाज को और

नकारात्मक सोच की तरफ ले जा रहा है। आज के समय मे हम अपने आपको और इस धरती को बचाना चाहते हैं तो इसका परिवर्तन करना जरूरी है जो की बेहद के ज्ञान से हो सकता हे। जो बेहद के ज्ञान को धारण करेगा वो सिर्फ अपने लिए नहीं सारे सृष्टि के लिए काम करेगा और ये स्थूल सृष्टि को एक नयी और आध्यात्मिक सृष्टि मे परिबर्तन करने मे सहायता करेगा। इसलिए गीता मे ये भी लिखा है जो अपने लिए जीता है वो पशु हे ओर जो सारे सृष्टि के लिए जीता है वो फरिश्ता हे। आज के समय मे सूचना प्रौद्योगिकी (IT)क्षेत्र का इतना बिकास हुआ है की इसके द्वारा ज्ञान youtubeद्वारा आसानी से कोई भी ले सकता हे। ये बेहद के ज्ञान को बिना मूल्य इंटरनेट के माध्यम से पा सकता हे।

सृजन परिवर्तन का विज्ञान क्या है?

हालांकि यह विषय बहुत विशाल और गहरा है, जो समझने के लिए बहुत समय और स्थान की आवश्यकता है, लेकिन यहां इसे बहुत ही कम और संक्षिप्त ढंग से व्यक्त किया गया है। जीवन का निर्माण कंपन का एक रूप है इस रचना में सब कुछ विशेष आवृत्तियों(फ्रिक्वेन्सी) मे कंपन हो रहा है। आज की बिज्ञान ने इस अनंत सृष्टि के कुछ रहस्य का खुलासा किया हे जैसे की हमारी आकाशगंगा (galaxy) मे अनंतकोटी सौर मण्डल (solar system) घूमरहें हें , ऐसे ही असंख्य आकाशगंगा एक यूनिवर्श (universe) के अंदर घूम रहें हैं, अंतरीक्ष मे असंख्य यूनिवर्स हे जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकते हैं। जैसे हमारे भोतिक दुनिया मे एक छोटी

बेहद की परमशांति

शक्ति एक बड़ी शक्ति के चारों ओर घूमती रहती है ऐसे ही सौर मण्डल आकाशगंगा मे और आकाशगंगा यूनिवर्स मे घूमता रहता है। सूर्य , ग्रह, आकाशगंगा , यूनिवर्स में सारे चीज घूम रहें हें लेकिन एक बिशेष आवृत्तियों(फ्रिक्वेन्सी) मे। कोई चीज इस अंतरीक्ष मे स्थिर नहीं हे लेकिन हम इस धरती मे बसना चाहते हैं। हमारी हालत समझने के लिए एक उदाहरण दिया जाता हे। जैसे की एक चींटी एक पत्ते के ऊपर बैठी हे ओर वो पत्ता एक कोटोरी मे हे ओर ये कोटोरी एक टोकरी मे बंद है ओर ये टोकरी एक जहाज के अंदर हे ओर ये जहाज एक असीमित समुद्र मे जा रहा हे। ये समुद्र अंतरीक्ष हे और ये धरती एक पत्ता जैसा हे ओर हमारी हालत एक चींटी जैसी हे। समुद्र की एक छोटासी लहर सब कुछ एक क्षण मे अंत कर सकती हे लेकिन हम लोग इस पृथ्वी के ऊपर सबसे बड़ा बनने के लिए लड़ रहे हैं। इससे हमारी हालत क्या है सब समझ सकते है। बेहद की ज्ञान का मतलब हे की आपको पूरी जानकारी होनी चाहिए के आप कहाँ हे और किस समय मे है कौनसी दिशा मे जा रहें हैं। आपको पूरा ज्ञान होना चाहिए की कैसे एक ही शक्ति पूरी सृष्टि को संचालन कर रही हे। अभी तक के सभी रहस्य जो की सभी पवित्र ग्रंथों (श्रीमद भगवत गीता, बाइबल ,कोरान, हिन्दू मे 18 पुराण इत्यादि) मे लिखा गया हे उसकी पूरी तरह समझ भी होनी चाहिए। आपको जब ज्ञान के द्वारा पता लग जाएगा एक ही असीमित शक्ति ने सारी सृष्टि रची हे ओर वही शक्ति उसी का पालन पोषण कर रहा हे तो आपके अंदर सभी संदेह दूर हो जाएगा और आपको

बेहद की परमशांति

किसी मंदिर या धर्म ग्रंथ या किशि गुरु या किसी शारीरिक ब्यायाम की जरूरत नहीं शांति पाने के लिए। आपको जब ज्ञान आयेगा तभी आपको पता चलेगा की ये हद की सृष्टि; जहां हम रहने के लिए इतना मेहनत कर रहें हैं वो नष्ट होने बाला है। ये भी पता लगेगा की आप क्यूँ ओर कैसे ये हद की सृष्टि मे आयें हे। जब ये सारे प्रश्नों के उत्तर ज्ञान के द्वारा मिल जाएगा आपको अपने जन्म का लक्ष्य पता चल जाएगा ओर आपका मूल काम क्या है वो पता चलेगा और आपके अंदर परिवर्तन आयेगा। जैसे आपके अंदर परिवर्तन आयेगा आपको देख कर आपके आस पास लोग भी अपने आप को परिवर्तन करेंगे। ये बहुत गहरी ज्ञान है ये आपको कोई किताब या धर्म ग्रंथ या गुरु या मंदिर मे नहीं मिल सकता इसके लिए आपको बेहद के बाप के जानना पड़ेगा और योग लगाना पड़ेगा।

जैसे ऊपर लिखा गया है सभी स्थूल चीज चाहे वो ब्रह्मांड हो या एक अणु (एटम) कोई स्थिर नहीं हे ;सारी बस्तुएँ इस हद और बेहद की सृष्टि मे कंपायमान स्थिति मे है। उनकी कंपन की एक बिशेष अब्रुती या फ्रिक्वेन्सी है। ये आव्रति या फ्रिक्वेन्सी कौन निर्धारित कर रहा हे? क्यूँ की ये सारे जो बस्तुएँ हिल रहा हे या घूम रहा हे ये सब जड़ हे उनमे कोई शक्ति नहीं हे। यहाँ एक छोटा सा उदाहरण देते हैं जैसे एक ब्यक्ति जो की कुछ देर पहले खुश है वही अब दुखी है। हम सिर्फ उसके बाहर के व्यवहार को देख रहें है बाकी उसके मन के अंदर क्या चल रहा हे ये हम

बेहद की परमशांति

नहीं जानते। एक शक्ति उसके अंदर काम कर रही हे और ये मन को विचलित करती हे और इसके शरीर उसी के हिसाब से कंपायमान होता हे जो हमे दिखता हे वो खुश हे या दुखी हे। इसी को उस ब्यक्ति की आव्रति या फ्रिक्वेन्सी कहा जाता हे जो की मन की सोच से उत्पन्न होती हे। इसलिए सभी धर्म ग्रन्थों मे मन को आयत्त करने के लिए कहा गया हे। ऐसे ही सभी जीवित या जड़ मे भी ये कंपन चल रहा हे कुछ हम देख सकते हें कुछ हम नही देख सकते हें। जब एक स्थान की सभी जीवित या जड़ की कंपन एकत्रित या सम्मिलित रूप मे काम करता हे ये उस स्थान के कंपन को निर्धारित करता हे। जैसे कंपन होता हे तो बिज्ञान के हिसाब से उस स्थान की एक आव्रति या फ्रिक्वेन्सी होता है। ऐसे ही हर छोटे से छोटे और बड़े से बड़े बस्तु की एक फ्रिक्वेन्सी रहती है और ये सारे वायुमंडल को पहले सूक्ष्म (अणु , परमाणु जो की ये सुखमा आँखों को दिखता नहीं) स्तर पर प्रभाबित करता हे और बाद मे ये स्थूल मे दिखाई देता हे। ये एक बिज्ञान हे जिसके लिए आपको वो ज्ञान की गहराई मे जाकर उसको अभ्यास करना पड़ेगा तब आप अपने आप को और ये पूरी सृष्टि को परिवर्तन कर सकते है। लेकिन अभी समय कम हे शीघ्र ये ज्ञान प्राप्ति करें और परिबर्तन मे शामिल हो जाएँ।

पूरा जानकारी के लिए आप youtube site,

www.youtube.com/anant98251और इंटरनेट साइट

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

www.bapujidashrathbhaipatel.org मे ये बेहद की ज्ञान को बिना मूल्य इंटरनेट के माध्यम से प्राप्ति करें।

यहां यह भी उल्लेख किया गया है कि भौतिक संसार में भी जब एक न्यायाधीश को सर्वोच्च न्यायालय से सेवानिवृत्त किया जाता है, तो सेवानिवृत्त न्यायाधीश के किसी भी फैसले का कोई भी नतीजा नहीं है क्योंकि वह निर्णय का उच्चारण करने के लिए अपनी सारी शक्ति खो देता है। जब न्यायाधीश सत्ता में है, तो उसके निर्णय या आदेश पूरे देश के ऊपर बाध्यकारी है। तो समय को पहचान करें और सृष्टि के परिवर्तन के प्रति वर्तमान समय का कर्तव्य समझें। यदि कोई भूतकाल (जो इस धरती से चले गये हें जैसे की वो कोई भी अवतार या धर्म गुरु हो) में या भविष्य (जैसे कोई आने वाला है जैसे की कल्कि अवतार) में रहता है तो वह वर्तमान मे पावर मे जो न्यायाधीश हे उसको पहचान नहीं पाएगा और उससे जो फायदा मिल सकता वो भी नहीं मिलेगा। क्यूं की बेहद का बाप देना चाहता हे तो ले लो नहीं तो ऊपर बर्णित सूअर की कहानी जैसे इस स्थूल दुनियाँ मे कीचड़ मे रह जाओगे। इस महा कार्य मे सबको भागीदार बनना चाहिए और ये सब के कल्याण के लिए। अच्छे दिन वही लाएगा जिसके पास असीमित सामर्थ्य हे कोई राजनैतिक नेता या कोई बैज्ञानिक या कोई धर्म गुरु के बस की बात नहीं क्यूँ कि खुद वो स्थूल दुनिया मे स्थूल चीजे इकट्ठे करने मे और मान शान मे पड़े हैं। आईए इस महान बदलाव और उसके असीम लाभ में भाग लेने का अवसर नही खोये।

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

बेहद की परम परम शांति

ये बेहद के बाप को समर्पित

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

Date:- 21 July 2017, Surat Gujarat Samachar, Translation In Hindi Page 6 Thursday

दुनिया में सकारात्मक विचारों के सृजन के लिये चल रहा एक अद्भुत अभियान!

बापूजी दशरथ भाई *पटेल द्वारा अभी हाल ही में दुनिया भर में सकारात्मक ऊर्जा को चारों ओर फैलाने के लिए एक अनोखा अभियान चलाया जा रहा है। " बेहद की परमशांति " के महामन्त्र के उच्चारण से सारे विश्व मे परमशांति का वायुमंडल सभी को स्पर्श कर सकता है और पूरी दुनिया में सकारात्मक ऊर्जा* फैलने से दुनिया में शांति और प्रेम का साम्राज्य चारों ओर फैलेगा ऐसा विश्वास बापूजी और उनके अनुयायी श्रद्धा पूर्वक मान रहे हैं।

सूरत में बहनों द्वारा " बेहद की परमशांति " महामन्त्र का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

' बेहद ' के विषय पर चर्चा में शिल्पा कड़ीवाला द्वारा बताया गया कि " बेहद की परमशांति " के महामन्त्र से आसपास का और स्वयं के रहने के स्थान का वायुमण्डल परिवर्तन होता है। बापूजी हमें बतातें हैं कि

बेहद की परमशांति

दुनिया का विनाश होगा ऐसा बोलना और विचार करना भी हितकारी नहीं है क्योंकि विचार करना.. ये भी एक कर्म है और कर्म ही हमारे कारण शरीर को डिस्चार्ज करते हैं एवं चारों ओर भय का वातावरण निर्मित होता है। तभी ऐसे समय पर सकारात्मक सोचना ही एक मात्र उपाय है। ' परम् ' तक पहुंचने के लिए सकारात्मक वाइब्रेशन जरूरी हैं।

सूरत शहर में परमशांति के स्टिकर और बैनर्स का वितरण किया जा रहा है। इसके पश्चात पूरे गुजरात और भारत में भी इस महामन्त्र का वितरण किया जाएगा, जिससे हमारा सारा वातावरण सकारात्मक होगा और धीरे-धीरे सारी दुनिया परिवर्तन की खुशबू को महसूस करेगी।

बापूजी के अनुसार हमें कुछ भी नहीं करना है हमें सिर्फ कभी भी किसी भी स्थान पर " बेहद की परमशान्ति " के महामन्त्र को उच्चारण करना है..बाकी का कार्य अनन्त कुदरत करेगी।

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

આત્મીયતાનો અહેસાસ...
સરદાર ગુર્જરી
www.sardargurjari.com
E-mail : sgurjari2001@gmail.com
શનિવાર, તા. ૨૯ જુલાઈ, ૨૦૧૭
facebook.com/sardargurjari.anand
R.N.I. REG.NO.GUJGUJ/2001/05931
P.O. REGD.NO: AND-308/2015-17

શિવપુજન
BHK, 2 BHK, 3 BHK

આપની આતુરતાનો અંત...
લેડીઝ તથા જેન્ટ્સ માટેના પ્રખ્યાત કંપનીના અંડર ગાર્મેન્ટ નાઈટવેર, વેસ્ટર્ન આઉટફીટનો ભવ્ય સેલ
રવિવારે રજા
હોઝીયરી માર્ટ

...વણ માસમાં થતા ...વાસનું આધ્યાત્મિક ...જ વૈજ્ઞાનિક મહત્વ

- પ્રોફે. એન્ડ હેડ કાજલ નિર્મલા ભરત રાવ
kajalbrav@gmail.com

દુનિયામાં સકારાત્મક વિચારો માટે ચાલતું અનોખું અભિયાન

દુનિયામાં અત્યારે નકારાત્મકતા ઠૂંસી ઠૂંસીને ભરેલી છે. જ્યાં જુઓ ત્યાંથી તમને નકારાત્મકતા બાબતો દેખાઈ આવશે. દેશ-દુનિયામાં બનતી ઘટનાઓ મોટેભાગે નકારાત્મકતા ફેલાવવાનું જ કામ કરે છે. આ નકારાત્મકતા આપણા મનમાં વધુને વધુ નકારાત્મકતા જન્માવતી જાય છે, જેનાથી સામાન્ય લોકો અજાણ જ રહે છે. જાણે અજાણે જ આ નકારાત્મકતાના પ્રવાહમાં તણાવા લાગે છે અને તેમની જિંદગીની ઊર્જા ઘટાડતા જાય છે અને દુ:ખોનાં કારણ ઊભા કરતા જાય છે. આવા સમયે હકારાત્મક ઊર્જા ક્યાંથી લાવવી? એ ઊર્જાનો આપણા માટે અને દેશ તથા આખી દુનિયા માટે કઈ રીતે ઉપયોગ કરી શકાય? તેનાં કેવાં સારાં પરિણામ આપણને મળી શકે? આ માટે આધ્યાત્મિક ગુરુ દશરથભાઈ પટેલે એક અભિયાન આદર્યું છે.

विश्व के महा परिवर्तन के लिए नया महा मंत्र,

बेहद की परमशान्ति

सोचो, बोलो, परमशान्ति मिल जाएगी

બાપુજી દશરથભાઈ પટેલ દ્વારા હાલમાં દુનિયામાં હકારાત્મક ઉર્જા ભરવા માટે એક અભિયાન ચાલી રહ્યું છે. 'બેહદ કી પરમશાંતિ' મંત્રથી વિશ્વ પરમશાંતિને સ્પર્શી શકે છે અને સમગ્ર દુનિયામાં પોઝિટિવ વાઈબ્રેશન ફેલાવવાથી દુનિયામાં શાંતિ અને પ્રેમનું સામ્રાજ્ય ફેલાશે એવુ બાપુજી અને અનુયાયીઓ શ્રદ્ધાપૂર્વક માને છે. આણંદમાં અનુયાયી બહેનો દ્વારા બેહદ કી પરમશાંતિ મંત્રનો પ્રચાર-પ્રસાર થઈ રહ્યો છે. બેહદ અંગે વાત કરતાં તેમના અનુયાયીઓ જણાવે છે કે 'બેહદ કી પરમશાંતિ' મહામંત્રથી વાયુમંડળ બદલાય છે. આત્માનો મૂળ સંસ્કાર છે પરમ શાંતિ! વારંવાર આ મંત્ર ભાવપૂર્વક બોલવાથી મનમાં પરમશાંતિની ભાવના ઉત્પન્ન થાય છે અને નકારાત્મક અસર બંધ થઈ જાય છે. વ્યક્તિની ઑરા પોઝિટિવ બને છે અને ધીરે ધીરે આસપાસનું વાયુમંડળ સકારાત્મક બને છે. દુનિયાનો વિનાશ થશે એવુ બોલવું અને વિચારવું પણ દુ:ખદાયી છે. કારણ કે વિચારવું એ પણ કર્મ છે અને એ કર્મ આપણા કારણ શરીરને ડિસ્ચાર્જ કરે છે.

આજે વાતાવરણ નકારાત્મક વિચારો અને શબ્દોથી ભરપૂર છે. જેથી શ્વાસમાં પ્રાણવાયુની સાથે એ નકારાત્મકતા જાય છે અને ઈચ્છા ન હોવા છતાં પણ વિચારો, વાણી, વર્તન બગડે છે. ચોતરફ ભયનો માહોલ સર્જાય છે ત્યારે હકારાત્મક વાયબ્રેશન જ તેનો ઉપાય છે. આજે આ મંત્રનો આણંદ, ગુજરાત સહિત ભારતમાં જોર-શોરથી પ્રચાર થઈ રહ્યો છે, જેનાથી આપણું વાયુમંડળ સકરાત્મક બનશે અને ધીરે-ધીરે દુનિયા તેની પરિવર્તનની ખુશ્બુ મહેસુસ કરશે. માત્ર ઉપરોક્ત વિશ્વ મહામંત્રનું ઉચ્ચારણ કરવાનું છે. એકપણ પૈસાનો ખર્ચ કર્યા વિના ઘરે બેસીને આ મંત્ર બોલવાનો છે કારણ કે કોઈ પણ કર્મ કરતા પહેલા વિચારાય છે, પછી બોલાય છે, પછી આચરણમાં આવે છે. 'બેહદ કી પરમ શાંતિ' વિચારો, બોલો, પરમ શાંતિ અવશ્ય મળશે જ એમ પુજ્ય બાપુજીનું કહેવું છે. બાકીનું કામ પરમ શક્તિ કુદરત કરશે. આ માટે આણંદ સહિત શહેરો-ગામોમાં અનુયાયીઓ દ્વારા પરમશાંતિના સ્ટીકરો, બેનર, સાઈનબોર્ડ લગાવાઈ રહ્યા છે. જેના પરિણામે દરેક આ મંત્ર વાંચે અને એક સારા અભિયાનમાં સામેલ થાય.

તમારા ઘરનો અરીસો બદલી શકે છે તમારૂં ભાગ્ય

દર્પણમાં અપ્રત્યાશિત સૌભાગ્ય, ધન-સંપત્તિ અને ઘરમાં હર્ષોલ્લાસ લાવવાની ક્ષમતા હોય છે. પરંતુ એવું પણ માનવામાં આવે છે કે જો તેનો ઉપયોગ ઘરમાં યોગ્ય જગ્યાએ કરવામાં ન આવે તો તે નકારાત્મકતાને પણ એટલી જ શક્તિને વધારે છે

જો વાસ્તુ શાસ્ત્રની વાત કરીએ તો તેમાં સૌથી શક્તિશાળી વસ્તુઓમાં એક અરીસાનો પણ સમાવેશ કરાયો છે. આ વાતનો અંદાજો તમે એના પરથી લગાવી શકો છો કે અરીસો વાસ્તુ શાસ્ત્રમાં કોઈ પણ પ્રકારના વાસ્તુ દોષ નિવારણ માટે અત્યંત ઉપયોગી માનવામાં આવ્યો છે. દર્પણમાં અપ્રત્યાશિત સૌભાગ્ય, ધન-સંપત્તિ અને ઘરમાં હર્ષોલ્લાસ લાવવાની ક્ષમતા હોય છે. પરંતુ એવું પણ માનવામાં આવે છે કે જો તેનો ઉપયોગ ઘરમાં યોગ્ય જગ્યાએ કરવામાં ન આવે તો તે નકારાત્મકતાને પણ એટલી જ શક્તિને વધારે છે. અરીસો જેટલુ ભાગ્યને આકર્ષિત કરે છે તેટલું જ દુર્ભાગ્યને પણ. આવો તમને જણાવીએ તેની સાવધાનીઓ અંગે.

- તિજોરીની સામે મૂકવામાં આવેલ અરીસો દિવસે બમણી અને રાત્રે ચાર ગણી વૃદ્ધિ કરે છે.
- ઘરમાં ખાવાના ડાઈનિંગ ટેબલની સામે મૂકવામાં આવેલ અરીસો અખંડ ધન-ધાન્યનું કારક હોય છે.
- પ્રયાસ કરો કે દર્પણ જે પણ દીવાલ પર લગાવવામાં આવે, તળિયાથી તેની ઊંચાઈ ચાર ફુટ હોય.
- ઘરમાં યથાશક્તિ ચોરસ અને ષષ્ટકોણ અરીસો જ લગાવો
- અરીસાને ઘરની ઉત્તર અને પૂર્વ દિશાની દીવાલ પર લગાવવાનું સૌથી ઉત્તમ રહે છે.
- તમારા ડ્રેસિંગ ટેબલમાં એક મોટો કાચ લગાવો અને તેને તમારી પથારીની બાજુમાં મૂકો જેથી કરીને સૂતી વખતે તમે કાચમાં ન દેખાવ. આમ કરવાને શુભ માનવામાં આવે છે.
- જો તમારા ઘરમાં કોઈ ખૂણો કપાયેલો છે તો એ દિશામાં અરીસો મૂકી દો. તેનાથી એ ખૂણાનો વાસ્તુ દોષ દૂર થઈ જશે.
- ઘરની બારી અને દરવાજાઓના કાચ ક્યારેય પારદર્શક હોવા ન જોઈએ.
- ક્યારેય બે અરીસા આમને-સામને લગાવવા ન જોઈએ. તેનાથી ઊર્જા અનિયંત્રિત થઈ જાય છે.

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

૬ ગુજરાત સમાચાર (સુરત આવૃત્તિ)

દુનિયામાં સકારાત્મક વિચારોના સર્જન માટે ચાલતું અનોખું અભિયાન

(પ્રતિનિધિ દ્વારા) સુરત, ગુરૂવાર

બાપુજી દશરથભાઈ પટેલ દ્વારા હાલમાં દુનિયામાં હકારાત્મક ઉર્જા ભરવા માટે એક અભિયાન ચાલી રહ્યું છે. 'બેહદ કી પરમ શાંતિ' મંત્રથી વિશ્વ પરમ શાંતિને સ્પર્શી શકે છે અને સમગ્ર દુનિયામાં પોઝીટીવ વાયબ્રેશન ફેલાવાથી દુનિયામાં શાંતિ અને પ્રેમનું સામ્રાજ્ય ફેલાશે એવું બાપુજી અને અનુયાયીઓ શ્રધ્ધાપૂર્વક માને છે.

સુરતમાં બહેનો દ્વારા 'બેહદ કી પરમશાંતિ' મંત્રનો પ્રચાર-પ્રસાર થઈ રહ્યો છે

બેહદ અંગે વાત કરતા શિલ્પા કડીવાલાએ જણાવ્યું કે, બેહદ કી પરમશાંતિ મંત્રથી આસપાસનું અને સ્વનું વાતાવરણ બદલે છે. બાપુજી કહે છે કે દુનિયાનો વિનાશ થશે એવું બોલવું કે વિચારવું પણ હિતાવહ નથી કારણ વિચારવું એ પણ કર્મ છે અને કર્મ આપણા કારણ શરીરને ડિસ્ચાર્જ કરે છે. ચોતરફ ભયનો માહોલ સર્જાય છે ત્યારે હકારાત્મક જ તેનો ઉપાય છે. પરમ સુધી પહોંચવા હકારાત્મક વાયબ્રેશન જરૂરી છે.

સુરતમાં બેહદ કી પરમશાંતિના સ્ટીકર અને બેનરની વહેંચણી કરવામાં આવી રહી છે. આ પછી સમગ્ર ગુજરાત અને ભારતમા આ મહામંત્રને લઈ જવાશે. જેનાથી આપણું વાયુ મંડળ સકારાત્મક બનશે અને ધીરે ધીરે દુનિયા તેની પરિવર્તનની ખુશ્બુ મહેસુસ કરશે. બાપુજીના જણાવ્યા અનુસાર "તમારે કશું નથી કરવાનું ગમે ત્યારે કોઈપણ સ્થળે માત્ર બેહદ કી શાંતિનું ઉચ્ચારણ કરવાનું છે. બાકીનું કામ અનંત - કુદરત કરશે."

पगड़ी रसम

बेहद की परमशांति

સકારાત્મક વિચારો માટે ચાલતું અભિયાન

આણંદ | સકારાત્મક વાતાવરણ સર્જાય તે માટે અમદાવાદના જાણીતા બાપુ દશરથભાઈ પટેલ દ્વારા બેહદ કી પરમશાંતિ મંત્ર નામે અનોખું અભિયાન ચલાવાય છે. બેહદ કી પરમશાંતિ નામને કારણે સમગ્ર દુનિયામાં પોઝીટીવ વાઈબ્રેશન ફેલાશે તેમ જણાવતા તેમના એક અનુયાયી હેમાક્ષીબેન પટેલે જણાવ્યું હતું કે, આ મંત્રથી પરમશાંતિની ભાવના ઉત્પન્ન થાય છે. અને નકારાત્મકતા ઓછી થાય છે. હાલમાં આણંદ શહેરમાં આણંદ-લાંભવેલ રોડ, અમૂલ ડેરી રોડ, કરમસદ ગામ સહિત કરમસદ-સોજિત્રા રોડ પર બેહદ કી પરમશાંતિના બેનર, સ્ટીકર લગાવીને સમગ્ર દેશ-દુનિયામાં શાંતિ છવાઈ રહે તેવું અભિયાન શરૂ કરવામાં આવ્યું છે.

દયાળજી મોહનજી મંદિરમાં હિંડોળા પર્વ

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

દિવ્ય સમાચાર

news

ચારેકોરથી ચરોતર

આણંદમાં બહેનો દ્વારા બેહદ કી પરમશાંતિ મંત્રનો પ્રચાર પ્રસાર થઈ રહ્યો છે

આણંદ, તા. ૨૫

બાપુજી દશરથભાઈ પટેલ દ્વારા હાલમાં દુનિયામાં હકારાત્મક ઉર્જા ભરવા માટે એક અભિયાન ચાલી રહ્યું છે બેહદ કી પરમશાંતિ મંત્રથી વિશ્વ પરમશાંતિને સ્પર્શી શકે છે અને સમગ્ર દુનિયામાં પોઝીટીવ વાઈબ્રેશન ફેલાવવાથી દુનિયામાં શાંતિ અને પ્રેમનું સામ્રાજ્ય ફેલાશે એવું બાપુજી અને અનુયાયીઓ શ્રદ્ધાપુર્વક માને છે.

બેહદ અંગે વાત કરતા હેમાક્ષીબેન પટેલ અને તેમના પરિવારે જણાવ્યું કે બેહદ કી પરમશાંતિ મહામંત્રથી વાયુ મંડળ બદલે છે. આત્માનો મુળ સંસ્કાર છે પરમશાંતિ વારંવાર આ મંત્ર ભાવપુર્વક બોલવાથી મનમાં પરમશાંતિની ભાવના ઉત્પન્ન થાય છે. વ્યક્તિનો ઓરા પોઝીટીવ બને છે અને ધીરે ધીરે આસપાસનું વાયુમંડળ સકારાત્મક બને છે. દુનિયાનો વિનાશ થશે એવું બોલવું અને વિચારવું પણ દુખદાયી છે. આજે વાતાવરણ નકારાત્મક વિચારો અને શબ્દોથી ભરપુર છે. જેથી શ્વાસમાં પ્રાણવાયુની સાથે એ નકારત્મકતા જાય છે અને ઈચ્છા ન હોવા છતાં પણ વિચારો, વાણી, વર્તન બગડે છે. ચોતરફ ભયનો માહોલ સર્જાય છે ત્યારે હકારાત્મક વાયબ્રેશન જ તેનો ઉપયોગ કરે છે. આજે આ મંત્રનો આણંદ, ગુજરાત સહિત ભારતભરના જોર શોરથી પ્રચાર થઈ રહ્યો છે. જેનાથી આપણું વાયુમંડળ સકારાત્મક બનશે અને ધીરે ધીરે દુનિયા તેની પરિવર્તની ખુશ્બુ મહેસુસ કરશે. માત્ર ઉપરોક્ત વિશ્વ મહામંત્રનું ઉચ્ચારણ કરવાનું છે. એકપણ પૈસાનો ખર્ચ કર્યા વિના ઘરે બેસીને આ મંત્ર બોલવાનો છે. કારણ કે કોઈપણ કર્મ કરતા પહેલા વિચારાય છે પછી બોલાય છે પછી આચરણમાં આવે છે. બેહદ કી પરમશાંતિ વિચારો, બોલો, પરમશાંતિ અવશ્ય મળશે જ. એમ પુજ્ય બાપુજીનું કહેવું છે. બાકીનું કામ પરમ શક્તિ કુદરત કરશે. આણંદમાં પરમશાંતિના સ્ટીકરો, બેનર, સાઈનબોર્ડ લગાવાઈ રહ્યા છે.

માન. રાજ્યકક્ષા મંત્રી રોહિતભાઈ પટેલ દ્વારા ધારાફંડમાંથી થયેલ ખાતમુર્હૂત કરવામાં આવ્યું

બિરલા વિશ્વકર્મા મહાવિદ્યાલય ખાતે સ્ટાર્ટઅપ ઈન્ડીયા દ્વારા પરિસંવાદ યોજાયો

કપડવંજ તાલુકાના તૈયબપુરાના પેટાપરા મહારીનગર શાળામાં વૃક્ષારોપણ કરાયું

એમ. યુ. પટેલ ટેકનિકલ હાઈસ્કૂલમાં ક્વિઝ યોજાઈ

www.youtube.com/anant98251

बेहद की परमशांति

દિવ્ય સમાચાર
બુધવાર 26.07.2017 5

આણંદ આર્ટ્સમાં કેશલેસ ટ્રાન્ઝેક્શન વિશે વ્યાખ્યાન યોજાયું

આણંદ જીલ્લા શિવસેના દ્વારા ખેરડામાં વૃક્ષારોપણ કાર્યક્રમ યોજાયો

આઈ. પી. મિશન ગર્લ્સ હાઈસ્કૂલમાં વિશ્વ વસ્તી દિનની ઉજવણી કરાઈ

એમ. એસ. મીસ્ત્રી પ્રાથમિક શાળામાં નોટો-ચોપડાનું વિતરણ કરાયું

ડી.ડી.યુ. કૌશલ કેન્દ્રની વિદ્યાર્થીનીઓએ કથ્થકની પ્રવેશીકા પ્રથમ પરીક્ષામાં ઝળહળતી સફળતા મેળવી

સેમકોમ કોલેજમાં ફાઈન આર્ટસ સ્પર્ધા તથા પ્રદર્શન યોજાયું

આણંદમાં બહેનો દ્વારા બેહદ કી પરમશાંતિ મંત્રનો પ્રચાર પ્રસાર થઈ રહ્યો છે

આણંદ, તા. ૨૫

બાપુજી દશરથભાઈ પટેલ દ્વારા હાલમાં દુનિયામાં હકારાત્મક ઉર્જા ભરવા માટે એક અભિયાન ચાલી રહ્યું છે બેહદ કી પરમશાંતિ મંત્રથી વિશ્વ પરમશાંતિને સ્પર્શી શકે છે અને સમગ્ર દુનિયામાં પોઝીટીવ વાઈબ્રેશન ફેલાવવાથી દુનિયામાં શાંતિ અને પ્રેમનું સામ્રાજ્ય ફેલાશે એવું બાપુજી અને અનુયાયીઓ શ્રદ્ધાપુર્વક માને છે.

બેહદ અંગે વાત કરતા હેમાક્ષીબેન પટેલ અને તેમના પરિવારે જણાવ્યું કે બેહદ કી પરમશાંતિ મહામંત્રથી વાયુ મંડળ બદલે છે. આત્માનો મુળ સંસ્કાર છે પરમશાંતિ વારંવાર આ મંત્ર ભાવપુર્વક બોલવાથી મનમાં પરમશાંતિની ભાવના ઉત્પન્ન થાય છે. વ્યક્તિનો ઓરા પોઝીટીવ બને છે અને ધીરે ધીરે આસપાસનું વાયુમંડળ સકારાત્મક બને છે. દુનિયાનો વિનાશ થશે એવું બોલવું અને વિચારવું પણ દુખદાયી છે. આજે વાતાવરણ નકારાત્મક વિચારો અને શબ્દોથી ભરપુર છે. જેથી શ્વાસમાં પ્રાણવાયુની સાથે એ નકારત્મકતા જાય છે અને ઈચ્છા ન હોવા છતાં પણ વિચારો, વાણી, વર્તન બગડે છે. ચોતરફ ભયનો માહોલ સર્જાય છે ત્યારે હકારાત્મક વાયબ્રેશન જ તેનો ઉપયોગ કરે છે. આજે આ મંત્રનો આણંદ, ગુજરાત સહિત ભારતભરના જોર શોરથી પ્રચાર થઈ રહ્યો છે. જેનાથી આપણું વાયુમંડળ સકારાત્મક બનશે અને ધીરે ધીરે દુનિયા તેની પરિવર્તની ખુશ્બુ મહેસુસ કરશે. માત્ર ઉપરોક્ત વિશ્વ મહામંત્રનું ઉચ્ચારણ કરવાનું છે. એકપણ પૈસાનો ખર્ચ કર્યા વિના ઘરે બેસીને આ મંત્ર બોલવાનો છે. કારણ કે કોઈપણ કર્મ કરતા પહેલા વિચારાય છે પછી બોલાય છે પછી આચરણમાં આવે છે. બેહદ કી પરમશાંતિ વિચારો, બોલો, પરમશાંતિ અવશ્ય મળશે જ. એમ પુજ્ય બાપુજીનું કહેવું છે. બાકીનું કામ પરમ શક્તિ કુદરત કરશે. આણંદમાં પરમશાંતિના સ્ટીકરો, બેનર, સાઈનબોર્ડ લગાવાઈ રહ્યા છે.

બિરલા વિશ્વકર્મા મહાવિદ્યાલય ખાતે સ્ટાર્ટઅપ ઈન્ડીયા દ્વારા પરિસંવાદ યોજાયો

કપડવંજ તાલુકાના તૈયબપુરાના પેટાપરા મદારીનગર શાળામાં વૃક્ષારોપણ કરાયું

માન. રાજ્યકક્ષા મંત્રી રોહિતભાઈ પટેલ દ્વારા ધારાફંડમાંથી થયેલ ખાતમુહૂર્ત કરવામાં આવ્યું

એમ. યુ. પટેલ ટેકનિકલ હાઈસ્કૂલમાં ક્વિઝ યોજા...

बेहद की परमशांति

ઉપાસના
શનિવાર ■ તા. ૨૯-૭-૨૦૧૭

શ્રાવણ માસ : અજર- અમર અવિનાશીની ઉપાસનાનું પર્વ

શિવપુરાણમાં શિવલિંગનું સ્વરૂપ અને મહત્વ

શ્રાવણ માસમાં થતા ઉપવાસનું આધ્યાત્મિક તેમજ વૈજ્ઞાનિક મહત્વ

દુનિયામાં સકારાત્મક વિચારો માટે ચાલતું અનોખું અભિયાન

તમારા ઘરનો અરીસો બદલી શકે છે તમારૂં ભાગ્ય

kajalbrav@gmail.com

बेहद की परमशांति

Visit Bapuji Video Link For More Details (11 Minutes Video)

Behad Ka Parm Shanti Mantra Video By Bapuji

Link Https://Youtu.Be/4ropcw0h5ay

Www.Youtube.Com/Anant98251

Www.Bapujidashrathbhaipatel.Org

Contact: - Anant Patel (Bapuji's Son) +91- 9825157852

Published by: Jyoti Prakash

विश्व के महा परिवर्तन
के लिए नया महामंत्र
" बेहद की परमशान्ति
सोचो, बोलो,
परमशान्ति
मिल जाएगी "
www.youtube.com/anant98251